**बहुमूल्य वादा (पुराना नियम)**

**उत्पत्ति 15:1 ... "हे अब्राम, मत डर; तेरी ढाल और तेरा अत्यन्त बड़ा फल मैं हूं"।**

परमेश्वर अब्राम की ढाल थे --उसे इस पृथ्वी के सभी राजाओं और उनके शत्रुओं की सेना की शक्ति और क्रोध से बचाने और सुरक्षित रखने के लिए और परमेश्वर इस योग्य थे और उनकी इच्छा भी थी कि सभी बातें - मिलकर अब्राहम के लिए भलाई को उत्पन्न करें। इस विचार में क्या सुख चैन है। यह वचन हमें भी यह याद दिलाता है कि परमेश्वर हमारी भी ढाल हैं और हर बुरी वस्तु और बुरी शक्ति से हमें बचाने वाले हैं। यह बात एक गीत में भी बहुत अच्छे से व्यक्त की जाती है --हमारे प्राणों की ढाल, आपका हलचल मचा देने वाला प्रकोप, और मेरे विरोधी बहुत से शत्रु बने हैं, पर मेरा शरणस्थान और गढ़ तो आप हैं, आप के सामने हर शत्रु निश्चय ही झुकेगा। इस वचन में जो सान्तवना दी गई है अब्राहम को, वह जो भी अब्राहम के विश्वास का है, उन सभी के लिए लागु होती है। नए नियम में प्रभु यीशु ने इसी वचन से मिलता-जुलता वादा किया है। यूहन्ना 14 के 21 और 23 वचन में।

यूहन्ना 14:21 जिस के पास मेरी आज्ञा है, और वह उन्हें मानता है, वही मुझ से प्रेम रखता है, और जो मुझ से प्रेम रखता है, उस से मेरा पिता प्रेम रखेगा, और मैं उस से प्रेम रखूंगा, और अपने आप को उस पर प्रगट करूंगा।

यूहन्ना 14:23 यीशु ने उस को उत्तर दिया, यदि कोई मुझ से प्रेम रखे, तो वह मेरे वचन को मानेगा, और मेरा पिता उस से प्रेम रखेगा, और हम उसके पास आएंगे, और उसके साथ वास करेंगे।

जब हम पृथ्वी पर एक परदेशी की तरह यात्री बनकर विश्वास में चलते हैं और उन सभी धन्य, मीठी विरासत पर विश्वास करते हैं जो की जय पाने

वाले संतों के लिए रखी गई है, तब सभी लालसाओं और परिक्षाओं के बीच में हम हमारे परमेश्वर की आवाज़ को भी पहचान पाते हैं, जो ये कहतें हैं की --डरो मत, तेरी ढाल और तेरा अत्यन्त बड़ा प्रतिफल मैं हूँ। R.1906, c.1,p.1 आमीन

**उत्पत्ति 18:14 क्या यहोवा के लिये कोई काम कठिन है?**

परमेश्वर की आत्मा सामर्थ्यवान है, चाहे जैसे भी इसे लागु किया जाए। इसकी शक्ति का उदहारण देने के लिए, प्रेरितों ने हमें प्रभु यीशु की मृत्यु और फिर किस प्रकार परमेश्वर की आत्मा ने प्रभु यीशु को पुनरुत्थान करके जिलाया, इसके तरफ संकेत किया है। यहाँ पर ये विचार है कि परमेश्वर की जिस (आत्मा) ने प्रभु यीशु को जिलाया, उनके लिए कार्य किया, जगत के अंत में वही शक्ति सभी विश्वाशी मसीह के देह के सदस्यों के जीवन में भी कार्य करेगी। क्योंकि ये परमेश्वर का हमारे लिए किया गया वादा है। ये हमें स्पष्ट बताता है कि 'परमेश्वर  की शक्ति' जिसके द्वारा, यदि हम उसका लाभ उठायें तो हमारी नई सृष्टि को निश्चय विजयी होने के लिए बल मिलेगा , शरीर को नई सृष्टि के शासन में रखने का बल मिलेगा। और इन सब से ज्यादा, नई सृष्टि को परिश्रमी, फुर्तीला बनने का बल मिलेगा। औए परमेश्वर की शक्ति से नई सृष्टि धार्मिकता की सेवा में चुस्त -दुरुस्त रहेगी। R.3203,c.1.p.4. आमीन

**उत्पत्ति 28:15 और सुन, मैं तेरे संग रहूंगा, और जहां कहीं तू जाए वहां तेरी रक्षा करूंगा...।**

सीढ़ी के दूसरे छोर पर से याकूब परमेश्वर की आवाज़ सुनता है, जो यह कहती है कि -- “मैं यहोवा, तेरे दादा अब्राहम का परमेश्वर, और इसहाक का भी परमेश्वर हूं: जिस भूमि पर तू पड़ा है, उसे मैं तुझ को और तेरे वंश को

दूंगा"। परमेश्वर का यह वादा याकूब के लिए बहुत ही दिलासा और आश्वासन देने वाला था। वह सब कुछ खोकर भी संतुष्ट था, क्योंकि वह अब भी परमेश्वर के दिव्य समर्थन के वादे और उनके सबसे आश्चर्यजनक वादे का वारिस था। इस वादे के पुरे मतलब की कदर वो शायद ही कर सकता था। यही बात हम सब के लिए भी लागु होती है। जिन्होनें अपने जीवन से सम्बंधित सभी लक्ष्यों को छोड़कर आत्मसमर्पण करके, पिता की आवाज़ को सुनकर, पिता के वादों के द्वारा आकर्षित हुए हैं। और हम सब को भी उनसे दिव्य समर्थन मिलेगा, और मुख्य आशीषों में हम भी परमेश्वर के वारिस होंगें। R.3965,c.1.p.1,2. आमीन

**निर्गमन 4:12 अब जा, मैं तेरे मुख के संग हो कर जो तुझे कहना होगा वह तुझे सिखलाता जाऊंगा।**

जो अभी के समय में नम्र हैं, उनको जैसे पुराने समय में मूसा को कहा था, कहते हैं -"अब जा, मैं तेरे मुख के संग हो कर जो तुझे कहना होगा वह तुझे सिखलाता जाऊंगा"। यहाँ पर एक पाठ तो यह है कि हमे खुद के ऊपर, खुद के न्याय के ऊपर और खुद की शक्ति के ऊपर बिल्कुल भरोसा नहीं होना चाहिए, और दूसरा महत्वपूर्ण पाठ यह है कि हमारा हर एक भरोसा, सम्पूर्ण भरोसा केवल परमेश्वर पर ही होना चाहिए। जब तक हम यह पाठ नहीं सिख लेते हैं, तब तक हम परमेश्वर के प्रतिनिधि बनने के योग्य नहीं बन सकते। पवित्र शास्त्र में लिखी गई सभी बातें एक ही सच्चाई की और इशारा करती है --कि सभी गुणों में नम्रता सबसे जरूरी गुण है, सभी परमेश्वर के लोगों के लिए जिन्हें परमेश्वर अपने महत्वपूर्ण कार्यों में और ख़ास कार्यों में लगाएंगे। यदि प्रभु के पीछे चलने वाले लोग इस बात को याद रखें और लगातार अपने मार्गों को इस और मोड़ते रहें, तो हमे यह निश्चय हो जाएगा कि वे लोग कितने ज्यादा काम में आएंगें। R.5262,c.2.p.1,3. आमीन

**निर्गमन 33:14 यहोवा ने कहा, "मैं आप तेरे साथ चलूंगा और तुझे विश्राम दूंगा"।**

परमेश्वर अपने लोगों के साथ हमेशा उपस्थित रहते हैं। वो हमेशा हमारे बारे में सोचते रहते हैं, हमारे हित के ऊपर उनकी दृष्टि सदैव बनी रहती है, खतरों से हमारा बचाव करते रहते हैं। सांसारिक और आत्मिक जरूरतों की सदा पूर्ति करते रहते हैं। हमारे दिलों को पढ़ते रहते हैं, उनके प्रति हमारी भक्ति से जुडी हर एक भावना और प्रेम पर ध्यान देते रहते हैं, हमारे चारों ओर के सभी प्रभावों, दबावों को हमारी शिक्षा, अनुशाशन और हमें सूक्षम रूप से सुधारने के लिए उपयुक्त बनाते रहते हैं। और उनकी सहायता या सहानुभूति या उनके साथ मेलजोल के लिए की गई धीमी सी पुकार को भी वे ध्यान से सुनते रहते हैं। जब परमेश्वर अपने दासों के साथ हमेशा रहने की बात करते हैं तो हमें ये नहीं सोचना है कि वो शारीरिक रूप से हमारे साथ-साथ रहेंगें, बल्कि उनकी आत्मा हमारे साथ रहती है। उनके चुने हुए दिव्य स्वर्गदूतों के रूप में और वे हमारा मार्गदर्शन करते हैं, आशीष देते हैं, और हमें सहारा देते हैं। वे हमें वो सब कुछ जो हमें हानि पहुंचा सकता है, से बचाते रहते हैं। वो हमारे सभी हितों को ध्यान से देखते रहते हैं, और कोमलता के साथ हमारे सभी हितों की देखभाल और सुरक्षा करते हैं। R. 5547, c.2, p.4. आमीन

**व्यवस्थाविवरण 28:12 यहोवा तेरे लिये अपने आकाशरूपी उत्तम भण्डार को खोलकर... देगा...।**

और अब प्रभु का दिन आ चूका है। हमलोग मनुष्य के पुत्र प्रभु यीशु मसीह के दूसरे आगमन की उपस्थिति वाले समय में जी रहें हैं जो कि --कटनी के

प्रभु हैं। प्रभु यीशु मसीह के सर पे सोने का मुकुट (दिव्य अधिकार) और हाथ में चोखा हंसुआ (शक्ति) है --"वर्तमान सच्चाई" का हँसुआ है, जो कि स्पष्ट रीती से "परमेश्वर के वचनों" को जो कि जीवित और प्रबल है उन्हें सामने ला रहा है, परमेश्वर के वचनों में दोधारी तलवार से भी ज्यादा तेज धार है। और ये वचन हमारे विचारों और ह्रदय के इरादों को जाँचने में मदद करते हैं। जैसे यहूदियों के समय की कटनी में हुआ था, अभी के समय में भी परमेश्वर अपने "मजदूरों" या "स्वर्गदूतों" या "दूतों" को कटनी में भेज रहे हैं, उदाहरण के लिए प्रभु यीशु मसीह के समर्पित और वफादार चेले जिनके पास कटनी का संदेशा है - जो कि अभी के समय में पूरी तरह से प्रगट परमेश्वर की दिव्य योजना और  इसके निश्चित समय और सारे मौसम हैं। R 1362,c.1,p.3 आमीन

**व्यवस्थाविवरण 31:6 ...क्योंकि तेरे संग चलने वाला तेरा परमेश्वर यहोवा है; वह तुझ को धोखा न देगा और न छोड़ेगा**।

यह सच है कि चाहे परमेश्वर के लोगों को सभी तरफ से सभी चीज़ों में अन्धकार नज़र आए, फिर भी वे निराश नहीं होते, वे कभी भी उम्मीद नहीं छोड़ते चाहे जो हो जाए; क्योंकि उनसे परमेश्वर ने उन्हें कभी न छोड़ने और कभी न त्यागने का वादा किया है। यह अनुग्रह से भरा हुआ वादा हमें अवश्य पक्की और अटल आशा देगा। हमारी आशा का सहारा (पभु यीशु) हमें पकडे रहेंगे। इसलिए, दुनिया की तुलना में हमारी अवस्था बहुत अलग है। क्योंकि दुनिया के पास तो कोई आशा ही नहीं है। दुनिया के पास कोई ठोस आशा नहीं है। ठोस सहारा नहीं है, और न ही दृढ़ता से पकड़ने के लिए कोई बहुत बड़ी और बहुमूल्य प्रतिज्ञाएँ या वादे हैं। हम जानते हैं कि यदि बुरे से भी बुरा हो जाए, यदि हम भुखमरी से मर भी जाएँ, तो भी हमारी आशा पवित्र स्थान के दूसरे पर्दे के उस पार, मृत्यु के बाद भी बनी है।

(अति पवित्र में जाने की आशा, छोटी झुण्ड बनने की आशा, इत्यादि) इसलिए, परमेश्वर के संतों के पास आज के समय में  मृत्यु एक ऐसा मार्ग है, जिसके द्वारा वे अपने सभी आशाओं और आनन्द की प्राप्ती कर सकते हैं। R 5671,c.1,p.3 आमीन

**व्यवस्थाविवरण 31:8 और तेरे आगे आगे चलने वाला यहोवा है; वह तेरे संग रहेगा, और न तो तुझे धोखा देगा और न छोड़ देगा; इसलिये मत डर और तेरा मन कच्चा न हो॥**

परमेश्वर की दिव्य सुरक्षा उनके पुत्रों पर बहुत ही ख़ास सुरक्षा है - उनके सभी क़दमों को परमेश्वर के क्रम में किया है और उनके सिर के सब बाल भी गिने हुए हैं, क्योंकि प्रभु की आंखे धमिर्यों पर लगी रहती हैं, और उसके कान उन की विनती की ओर लगे रहते हैं, उद्धार पाने वालों के लिए सेवा-टहल की आत्माएँ भेजी जाती हैं। जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उन के लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती है; अर्थात उन्हीं के लिए जो उस की इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं। यह सारे वादे कितने खुबसूरत हैं और हमारी परिक्षा की घड़ियों में कितने खास लगते हैं। परमेश्वर सचमुच में सब के पिता हैं जो उनपर भरोसा रखते हैं, लेकिन जो उनके पुत्र हैं और जो उनके लिए अजनबी या शत्रु हैं, उनमे बहुत अन्तर है। R 1561,c.1,p.4 आमीन

**व्यवस्थाविवरण 33:12 "...यहोवा का वह प्रिय जन, उसके पास निडर वास करेगा; और वह दिन भर उस पर छाया करेगा, और वह उसके कन्धों के बीच रहा करता है"॥**

केवल विश्वासी लोगों की ही देखभाल परमेश्वर करते हैं। हमें यह नहीं समझना है कि परमेश्वर किसी की भी देख-रेख करेंगें, या उनकी जो

परमेश्वर की इच्छा जानने के लिए ठीक उचित प्रयास नहीं करते और न ही परमेश्वर की इच्छा को पूरी ही करते हैं। ये वचन केवल उन लोगों के लिए है जो प्रभु यीशु मसीह के पदचिन्हों पर चल रहें हैं, अपनी पूरी सामर्थ से परमेश्वर को प्रसन्न करने की चेष्टा कर रहे हैं और उस राह को पेहचान पा रहे हैं जिस पर परमेश्वर चाहते हैं की हम चलें। इन्हीं लोगों के कारण उनकी प्रशंशा की आवाज़ सुनी जा रही है। और परमेश्वर का अनुग्रह ही इनके हिस्से में बहुत है। यदि भविष्य में होने वाली विश्वाश की परिक्षाएं, हमारा समर्पण और भरोसा अभी की तुलना में बड़ा होना है। तब भी ये विश्वाशी लोग नहीं गिरेंगें क्योंकि वे परमेश्वर की छाया, उनकी देख-रेख में हैं--ये लोग परमेश्वर में सामर्थी होंगें, उनकी सामर्थ की शक्ति में मजबूत बनेंगें और यदि उन्हें जो दिखाई न दे उनके पीछे भी जाना पड़े तो जाया करेंगें। R 5501,c.2,p.2 आमीन

**यहोशू 1:9 …हियाव बान्धकर दृढ़ हो जा; भय न खा, और तेरा मन कच्चा न हो; क्योंकि जहाँ जहाँ तू जाएगा वहाँ वहाँ तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे संग रहेगा॥**

संसार, शरीर और शैतान के साथ युद्ध करने के लिए हमें हमारे अन्दर जितनी शक्ति, विश्वाश और मजबूती है, उससे ज्यादा मजबूती चाहिए। इसलिए हमें होसला इस वचन के द्वारा जो कि यहोशू को मिला था, दिव्य आश्वाशन के रूप में मिलता है। R 3080, c.2, middle आमीन

**यहोशू 23:14 … जितनी भलाई की बातें हमारे परमेश्वर यहोवा ने हमारे विषय में कहीं उनमें से एक भी बिना पूरी हुए नहीं रही;**…।

हमारे जीवन से जुडी हर छोटे से छोटे और बड़े से बड़े मामलों में परमेश्वर की नज़र सदा सर्वदा रहती है और उन्होंने हमेशा हमारे हितों

पर अपनी नज़र रखी है। (मतलब हर बुरे समय के बाद एक अच्छा समय आता है।) तो हमें परमेश्वर को क्या भेट देनी चाहिए? R 5538, c.1, last p.; c.2, top आमीन

**1 शमूएल 2:9 "वह अपने भक्तों के पावों को सम्भाले रहेगा" ...।**

जो मसीह में नई सृष्टि हैं, उन्हें कोई भी वस्तु हानि नहीं पहुँचा सकती, कुछ भी नहीं छुएगा। उनके लिए हमारा समय परमेश्वर के हाथ में है।
**भजन संहिता 31:15** मेरे दिन तेरे हाथ में है...।
हम नहीं जानते कि आज जो हम शरीर में मिल रहे हैं फिर से शरीर में मिलेंगें या नहीं। इसका क्या मतलब है? हम जीएं चाहे मर जाएँ, पूरी तरह से संतुष्ट हैं --हमारे परमेश्वर की ओर से जो भी हो, जो भी मिलें, हम संतुष्ट हैं। हमारे दिन, हमारा समय परमेश्वर के हाथ में हैं, हे मेरे परमेश्वर मैं चाहता हूँ की मेरा समय हमेशा आपके हाथ में ही रहे। ये गाना हमारे दिल की भावना को अच्छी तरह से पेश करता है। हम चाहते हैं कि हमारे जीवन के हर बदलाव में केवल परमेश्वर की ही इच्छा पूरी हो। और हम प्रतिदिन जो भी आनन्द मनाते हैं, वे सब परमेश्वर को ही समर्पित हो। हमारी इच्छाएँ पूरी तरह से मर चुकी हैं। केवल परमेश्वर की ही इच्छा हमारे शरीर में, हम सब के अन्दर प्रभुता करे। R 5862,c.2,p.3 and R 5728,c.2,p.5 आमीन

**1 शमूएल 12:22 यहोवा तो अपने बड़े नाम के कारण अपनी प्रजा को न तजेगा, क्योंकि यहोवा ने तुम्हें अपनी ही इच्छा से अपनी प्रजा बनाया है।**

इस वचन को जब हम आत्मिक इस्राएली पर लागू करते हैं तो हमे विशेष संतुष्टि मिलती है। जब शारीरिक इस्राएलियों पर परमेश्वर के अनोखे लोगों के रूप में गोद लिए जाने कि कृपा हुई जो कि दास के घराने से थे, तो

आत्मिक इस्राएलियों पर उनका अनुग्रह कितना बड़ा होगा, जो कि परमेश्वर के पुत्र के घराने में पुत्र की तरह गोद लिए गए हैं, उनका प्रमुख पुत्र प्रभु यीशु मसीह हैं। **इब्रानियों 3:6** परन्तु मसीह पुत्र के समान परमेश्वर के घर का अधिकारी है; और उस का घर हम हैं, यदि हम साहस पर और अपनी आशा के घमण्ड पर अन्त तक दृढ़ता से स्थिर रहें। ये सही है कि परमेश्वर के लोगों को पवित्र भय, परमेश्वर के प्रति आदर होना चाहिए; लेकिन यदि पवित्रशास्त्र में केवल हुक्म और उनका पालन करने के सबूत ही के बारे में लिखा होता तो निश्चय ही बहुत पहले ही परमेश्वर के सारे लोग निराश हो चुके होते। इसके विपरीत, हमें डाँटते हुए, सुधारने के लिए हमारे प्रभु यीशु ने परमेश्वर के प्रेम और करुणा की, उनकी भलाई और सदा की दया की बहुमूल्य गवाही दी है ताकि हमारा प्रोत्साहन हो। R 3223, c.2, p.3 आमीन

**2 शमूएल 22:2 "यहोवा मेरी चट्टान, और मेरा गढ़, मेरा छुड़ाने वाला"।**

ये वचन एक आशीषित, धन्य ढांढस है, जो परमेश्वर के सभी लोगों पर लागू होता है। और जो परमेश्वर में आनन्दित रहते हैं, उन्होंने प्रचुर मात्रा में परमेश्वर की सत्यता को चखा है, उनके द्वारा किए गए उपकारों पर ध्यान किया है, और उनके पवित्र नाम की महिमा, आदर और प्रशंसा की है। यहोवा मेरी चट्टान (जिसपर मैं अपनी आशाओं को सुरक्षित खड़ा कर सकता हूँ), और मेरा गढ़ (जहाँ मैं सुरक्षित छुप सकता हूँ), मेरा छुड़ाने वाला (जो मुझे हर मुसीबत या पीड़ा या परेशानी से छुड़ाता है) है । R 2032,c.2,p.1 आमीन

**2 इतिहास 16:9 देख, यहोवा की दृष्टि सारी पृथ्वी पर इसलिये फिरती रहती है कि जिनका मन उसकी ओर निष्कपट रहता है, उनकी सहायता में वह अपनी सामर्थ दिखाए...।**

इस वचन में यहोवा की दृष्टि - 'दृष्टि' का मतलब है यहोवा का प्रभाव, उनकी सबकुछ जानने की शक्ति, चाहे जानने का जरिया जो भी हो ... । परमेश्वर के पास अपना जरिया है, इसमें कोई शक नहीं, हममें से हर एक से अधिक श्रेष्ठ जरिया है - परमेश्वर हमें बताते हैं कि स्वर्गदूत उनके सेवक हैं, और इनके ऊपर परमेश्वर के निज लोगों की जिम्मेदारी है ... लेकिन परमेश्वर के स्वर्गदूतों पर - खासकर सुसमाचार के चर्च के सदस्यों की जिम्मेदारी है, जो पूरी दुनिया के इतिहास में परमेश्वर के किसी भी लोगों की जिम्मेदारी से ज्यादा है। परमेश्वर की आत्मिक इस्राएलियों में खास दिलचस्पी है। ये स्वर्गदूत इसलिए हमारी चौकसी करते हैं, हमारे सभी मामलों में देखभाल करते हैं और परमेश्वर की इच्छा को हम तक पहुँचाने के लिए सम्पर्क का माध्यम हैं, यहाँ सम्पर्क का मतलब है परमेश्वर से आनेवाली सभी सुरक्षात्मक देखभाल, जो कभी ये या कभी वो परिस्थिति, हमारे जीवन में लाती है। R.5634, c.1, p.3,4; R.5635,c.1,p.2 आमीन

**नहेमायाह 8:10 ...क्योंकि यहोवा का आनन्द तुम्हारा दृढ़ गढ़ है।**

आनन्द करने की हमारी जो क्षमता अभी है उतनी ही क्षमता थोड़ी देर में नहीं होगी, लेकिन अभी ये सम्भव है कि हमारे इस छोटे से मिटटी के घड़े (हमारा शरीर) को हम इतना भर लें कि वह परमेश्वर के आनन्द को पकड़ के रख सके। **यूहन्ना 14:23** वचन को पढ़ें (**यीशु ने उस को उत्तर दिया, "यदि कोई मुझ से प्रेम रखेगा तो वह मेरे वचन को मानेगा, और मेरा पिता उससे प्रेम रखेगा, और हम उसके पास आएंगे, और उसके साथ वास करेंगे"**।) जिनके संग परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह साथ हैं, क्या वैसी संगति में कोई मसीही कुछ मात्रा में परमेश्वर में आनन्दित रहने में पूर्ण रूप से असफल हो सकते हैं? नहीं, यदि हमने विश्वास में इस वादे को कसकर पकड़े और थामे रखा है, तब परमेश्वर के आनन्द की अनुमति अवश्य होगी।

और हमारी पकड़, हमारा विश्वास इस वादे पर जितना दृढ़ होता जाएगा, हम इस वादे को उतना ही ज्यादा अपने जीवन में पूरा होते हुए देखेंगे और उतना ही भरपूर आनन्द ज्यादा से ज्यादा पूरी तरह से हमारे में भरता जाएगा क्योंकि परमेश्वर की उपस्थिति में आनन्द की भरपुरी है, फिर चाहे हम किसी भी अवस्था या परिस्थिति में हों, हमारे अन्दर से परमेश्वर का आनन्द बहता ही जाएगा। R.1949, c.1,p.2,3. आमीन

**अय्यूब 5:19 वह तुझे छः विपत्तियों से छुड़ाएगा; वरन सात से भी तेरी कुछ हानि न होने पाएगी।**

यदि हम मसीह में बने रहे और उनके वचन हममें बने रहे तो वह हमारे को छह विपत्तियों से छुड़ायेंगें, वरन सात से भी हमारी कुछ हानी न होने पाएगी-- परमेश्वर हमें नहीं त्यागेंगें, क्योँकि हम परमेश्वर के द्वारा बुलाए गये हैं। क्योंकि हमने उनके बुलावे का उत्तर दिया है, क्योँकि हम अपने शरीर के द्वारा उनकी महिमा करने के लिए कोशिश कर रहें हैँ। इसलिए मनुष्य हमारा क्या कर सकता है? इस बात का हमें कोई भय नहीं होना चाहिए। एक कवि ने कुछ पंक्तियों में परमेश्वर के वादों को व्यक्त किया है --जब मैं तुम्हें गहरे जल में से होकर जाने को बुलाऊंगा तब यह दुःख की नदियां तुमको न बहा ले जाएगी; क्योँकि मैं (परमेश्वर) हर परेशानी में तुम्हारे साथ, तुम्हें आशीष देनें के लिए रहूंगा और तुम्हारी सबसे गहरी तनाव के द्वारा तुम्हें पवित्र करूंगा। R.5539, c.1, p.8.  R 4784, c.2, top आमीन

**भजन संहिता 16:8 मैं ने यहोवा को निरन्तर अपने सम्मुख रखा है: इसलिये कि वह मेरे दाहिने हाथ रहता है, मैं कभी न डगमगाऊंगा॥**

"मेरे दाहिने हाथ" का मतलब है "मेरे प्रेम में नज़दीक रहना", खुद पर भरोसा रखने के बदले, परमेश्वर का संग हमें ये आशा देता है कि खुद पर संदेह करो, अपनी कमजोरियों को याद करो, अपनी कमियों को याद करो और परिणाम स्वरुप परमेश्वर के लिए बड़ा आदर और उनपर ज्यादा आस्था और भरोसा रखो। परमेश्वर पर भरोसा और निर्भरता ही हमें सबसे ज्यादा बल देगा और हमें हमारी गिरी हुई अवस्था और बुराई से दूर ले जायेगा। जब हम विनम्र और विश्वासी बनते हैं, तभी परमेश्वर हमें अपना चुना हुआ पात्र बनाते हैं ताकि हम परमेश्वर का नाम दूसरों तक ले जाएँ। R. 5186, c.1, p.1; c.2, p.2. आमीन

**भजन संहिता 16:11 तू मुझे जीवन का रास्ता दिखाएगा; तेरे निकट आनन्द की भरपूरी है, तेरे दाहिने हाथ में सुख सर्वदा बना रहता है॥**

इन लोगों ने यह सीख लिया है कि अभी के जीवन की सभी वस्तुओं का मूल्य कैसे आंकना है, उनकी असली उपयोगिता के अनुसार, वे यह पाते हैं कि अभी के जीवन के सारे आनन्द क्षणिक और असंतोषजनक हैं। अभी के जीवन का सच्चा महत्व केवल उन अवसरों में है जो हमें अनुभवों के द्वारा, अनुशासन के द्वारा और पढाई के द्वारा परमेश्वर की बातों को सिखने में मिलते हैं, और परमेश्वर के बुलावे को सुनकर अपने बुलावे और चुनाव को पक्का करने में मिलते हैं। इसलिए यदि हम अभी के जीवन का सही उपयोग करना चाहते हैं तो हमें--जीवन के मार्ग पर जिसे परमेश्वर ने वचनों के द्वारा दिखाया है, उस पर चलते रहना चाहिए। अभी का आनन्द और आशा और विश्वास अनदेखी वस्तुओं पर है, लेकिन वे निश्चित हैं और अनन्त काल तक के लिए हैं। हम ये भी जानते हैं कि थोड़ी ही देर में जब हम परमेश्वर की उपस्थिति में निकट पहुँच जाएंगे, हमारे पास आनन्द की भरपूरी होगी, और परमेश्वर के दाहिने हाथ में सुख सर्वदा बना रहेगा --जो कि समर्थन का मुख्य स्थान है। हमारा आनन्द मुख्य रूप से हमारी वचनों

की पढाई और उन वचनों में किये गए बहुमूल्य वादों के ज्ञान पर निर्भर करता है। R. 5460, c.1, top आमीन

**भजन संहिता 18:2 यहोवा मेरी चट्टान, और मेरा गढ़ और मेरा छुड़ाने वाला है; मेरा ईश्वर, मेरी चट्टान है, जिसका मैं शरणागत हूं, वह मेरी ढ़ाल और मेरी मुक्ति का सींग, और मेरा ऊँचा गढ़ है।**

जो अपना भरोसा परमेश्वर पर रखते हैं, सब की ढाल प्रभु हैं, क्योंकि प्रभु को बचा सके ऐसा कौन परमेश्वर (सामर्थी) है? या जो चट्टान है (हमारे प्राणों के लिए एक सुरक्षित लंगर), उन्हें कौन परमेश्वर बचाते हैं? यहोवा को छोड़कर कोई भी दूसरा नहीं है जिनपर हम अपने विश्वास और आशा का लंगर डाल सकें; लेकिन सुरक्षापूर्ण तरीके से परमेश्वर के शरणागत होकर हम उनपर भरोसा कर सकते हैं और हमें डरने की कोई जरूरत नहीं है, और हम प्यार से उनके पंखों की छाँव में आराम कर सकते हैं। “यहोवा परमेश्वर जीवित है; मेरी चट्टान धन्य है; और मेरे मुक्तिदाता परमेश्वर की बड़ाई हो "। (भजन संहिता 18:46) R. 3337, c.2, p.4 आमीन

**भजन संहिता 18:32,29 “यह वही ईश्वर है, जो सामर्थ से मेरा कटिबन्ध बान्धता है, और मेरे मार्ग को सिद्ध करता है। क्योंकि तेरी सहायता से मैं सेना पर धावा करता हूं; और अपने परमेश्वर की सहायता से शहरपनाह को लांघ जाता हूं”।**

यदि कोई भी मनुष्य इसे अपनी सामर्थ्य से करने की चेष्टा करेगा, तो वह निशचय असफल होगा; क्योंकि जो दुःख रूपी अग्नि (1 पतरस 4:12) सबको परखेगी, वो शारीरिक दिमाग के लिए बहुत ज्यादा साबीत होगी; लेकिन परमेश्वर जिन्होंने अपनी सुइच्छा निमित्त समर्पित लोगों के मन में इच्छा और काम, दोनों बातों के करने का प्रभाव डाला है, (फिलिप्पियों 2:13), वो उन्हें मजबूत करेंगे और जो कोई भी परमेश्वर भी परमेश्वर के

अनुग्रह पर निर्भर करेगा उसे सुसज्जित करेंगे, ताकि, वे सब, यह कह सकें, "यह वही ईश्वर है, जो सामर्थ से मेरा कटिबन्ध बान्धता है, और मेरे मार्ग को सिद्ध करता है। क्योंकि तेरी सहायता से मैं सेना पर धावा करता हूं; और अपने परमेश्वर की सहायता से शहरपनाह को लांघ जाता हूं।" और पौलुस के साथ यह कह सकें, "जो मुझे सामर्थ देता है उस में मैं सब कुछ कर सकता हूं" (फिलिप्पियों 4:13)। आमीन।
R2154,c1,p4

**भजन संहिता 23:1 यहोवा मेरा चरवाहा है, मुझे कुछ घटी न होगी।**

जो भी सही भेड़ होती है, वो पूरी तरह से अपनी इच्छा को चरवाहे की इच्छा के लिए समर्पित कर देती है। और अपना पूरा भरोसा केवल चरवाहे के मार्गदर्शन पर ही रखती है। और इसलिए वे दुनिया के बच्चों को होनेवाली व्याकुलता से बच्ची रहती है। R3269,c1,p3
इन लोगों (भेड़) के पास ज्यादा शिक्षा नहीं होती है। मनुष्यों की तुलना में भेड़ बहुत ही जल्दी दुनियादारी के मामलों में चतुर नहीं होती है, कि गलतियाँ करने से बच जाए। लेकिन वे अपने चरवाहे की आवाज़ से अच्छी तरह से परिचित होते हैं, और अजनबियों की आवाज़ को तुरन्त पहचान लेते हैं। और कोई भी अजनबी के पीछे नहीं चलते, क्योंकि वे लोग केवल चरवाहे के प्रति ही आज्ञाकारी और वफादार होते हैं। इस वर्तमान युग की सभी बुराइयों के बीच में हमारी सुरक्षा केवल इसी में है,कि हमारा ह्रदय और मन चरवाहे की भेड़ की तरह हो। और वैसे लोग आनन्द से भजन संहिता 23 का दावा करते हुए गा सकते हैं। R. 3116,c1,p4,5 आमीन

**भजन संहिता 23:2 वह मुझे हरी हरी चराइयों में बैठाता है; वह मुझे सुखदाई जल के झरने के पास ले चलता है।**

परमेश्वर की ऐसी कौन सी भेड़ होगी जिसने ऐसी हरी घास की आध्यात्मिक ताज़गीयों को उनकी निजी भक्तिपूर्ण प्रार्थनाओं और दिव्य चीजों की पढ़ाई में...दूसरों के साथ वचनों का अध्ययन के लिये, प्रार्थना के लिये, परमेश्वर की भलाई और करुणा की गवाहियाँ देने के लिए होनेवाली सभाओं में नहीं पाया होगा? ये सारे अवसर और विशेषाधिकार महान चरवाहा के द्वारा भेड़ के लिए बनाए गए प्रावधान हैं। सच्चाई और अनुग्रह के झरने जीवित हैं, लेकिन सुखदाई जल के झरने हैं, इन्हें भेड़ अकेले खुद से नहीं खोज सकती हैं; इनको खोजने के लिए पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन की जरुरत होती है। आइये हम परमेश्वर की आवाज़ को इसकी सच्चाईपूर्ण स्वर से पहचानें, जो कि गलत आवाजों से एकदम अलग है। सच्ची भेड़ पराये के पीछे नहीं जाएंगी, क्योंकि वे परायों का शब्द नहीं पहचानती (यूहन्ना10:5)। सच्ची भेड़ को इसके पैसे की अंगूठी या इसके सांसारिक महत्वाकांक्षा की अंगूठी, या इसके कपटी शास्त्रियों के स्वर, या इसके दिव्य संदेश और दिव्य विधियों के परस्पर-विरोध की भावना पसंद नहीं है। R3269,c1,p5; c2,p1 आमीन

**भजन संहिता 23:3 वह मेरे जी में जी ले आता है। धर्म के मार्गो में वह अपने नाम के निमित्त मेरी अगुवाई करता है।**

वह मेरे जी में जी ले आता है (इसे मृत्यु से उद्धार दिलाती है); वह धर्म के मार्गो में मेरी अगुवाई करता है (क्योंकि मैं उसकी सन्तान हूँ और मैंने उनके आदरणीय नाम को धारण किया है)। R3116,c2,middle

इनके लागू करने से... मसीही अनुभव इन अनुभवों को... जी में जी ले आने या प्राणों को बचाने के जैसा बना देगा, जो कि हमारे जीवन के लिए धर्मी ठहरने के सदृश्य होगा... ताकि हम बलिदान कर सकें...और... महान चरवाहे के पदचिन्हों पर चल सकें जिन्होंने भेड़ के लिए अपने जीवन को बलिदान कर दिया है। इस प्रकार से सच्ची भेड़ की अगुवाई सही मार्ग में होती है,...यह अनुग्रह और आशीष और अवसर उनके पास, उनके अपने नाम या अपनी

योग्यता के निमित्त नहीं आते, बल्कि प्रभु के अनुग्रह के द्वारा -- 'उनके नाम के निमित्त" आते हैं। । R3269,c2,p2 आमीन

**भजन संहिता 23:4 चाहे मैं घोर अन्धकार से भरी हुई तराई में होकर चलूं, तौभी हानि से न डरूंगा, क्योंकि तू मेरे साथ रहता है; तेरे सोंटे और तेरी लाठी से मुझे शान्ति मिलती है॥**

छोटी झुण्ड की भेड़ किसी बुराई से नहीं डरती है, प्रभु के समर्पण की कारण, क्योंकि वे उनके पक्ष में है, उनकी तरफ हैं। और उन्होंने अपना समर्थन, छुड़ौती के दाम को, पहले चूका कर हमपर प्रगट किया है। वे उनके साथ, अपने वादों के वचन के साथ भी हैं -- उनका आश्वासन है कि मृत्यु का मतलब इनका सर्वनाश नहीं होगा... ये कितना अद्भुत है कि ये मृत्यु की तराईयों में गाते हुए और ह्रदय में सरगम बजाते हुए चलते हैं...जैसे चरवाहे की लाठी को, भेड़ को मुश्किलों से बाहर निकालने के लिए उपयोग में लाया जाता है, उसे बहुत ज्यादा शक्तिशाली शत्रुओं से बचाने के लिए उपयोग में लाया जाता है... और जब भेड़ असचेत हो जाए, तो शत्रुओं को ताड़ना देने के लिए उपयोग में लाया जाता है और उस लाठी का ये सारे उपयोग भेड़ के हित और कल्याण के लिए होते हैं। वैसा ही प्रभु की छोटी झुण्ड और उनके चरवाहे और चरवाहे की मदद की लाठी के साथ है...सच्ची भेड़ चरवाहे के प्रावधानों से प्रेम करना सीखती है और उनके द्वारा सुकून पाती है। R3269,c2,p3,4 आमीन

भजन संहिता **23:5** तू मेरे सताने वालों के सामने मेरे लिये मेज बिछाता है; तू ने मेरे सिर पर तेल मला है, मेरा कटोरा उमड़ रहा है।

कितनी अलग - अलग तरह की मेजें हैं, और इन मेजों पर, उपदेशों के नजरिये से, तरह - तरह की भोजन सामग्री है। ज्यादातर मेजों पर का

भोजन बनाते समय ही ख़राब हो गया है। इनमें कुछ उदास करने वाला भोजन है, कुछ खट्टा है, और ज्यादातर सड़ा हुआ है। क्योंकि ज्यादातर भोजन की उत्पत्ति "अंधकार के युगों" में हुई थी, और हमारे जो भी प्रिय मित्र इन मेजों पर खाने के लिये बैठते हैं, वे पाते हैं कि ऐसा भोजन करने के लिये उनके पास कम भूख है। हम इनका ध्यान दिव्य सच्चाई के उदारतापूर्ण और प्रचूर भंडार की ओर खींचते हैं जिसे खुद प्रभु यीशु विश्वास के घराने के साथ बाँट रहे हैं, ये "पुरानी और नई वस्तुएँ " हैं, लेकिन ये सब शुद्ध हैं, मीठी हैं, स्वादिष्ट हैं और भव्य हैं। ये मेज उन सभी लोगों के लिये खुली है जो प्रभु से अपने सारे मन, सारे प्राण, सारी बुद्धि और सारी शक्ति से प्रेम करते हैं - जो प्रभु से घरों या जमीनों, माता - पिता या बच्चों, पति या पत्नी, समाज या सामाजिक व्यवस्था या खुद से भी अधिक प्रेम रखते हैं। R3270,c1,p2 आमीन

**भजन संहिता 23:6 निश्चय भलाई और करूणा जीवन भर मेरे साथ साथ बनी रहेगी; और मैं यहोवा के धाम में सर्वदा वास करूंगा॥**

सन्त पौलुस बताते हैं कि, प्रभु के लोगों के लिए पूरा विश्वास और पूरी आशा का दृढ निश्चय होना ही, सही अवस्था है। और ऊपर के वचन में, भविष्यद्वक्ता इसी विचार को व्यक्त करते हैं - और मुझे इस बात का भरोसा है, कि जिस ने तुम में अच्छा काम आरम्भ किया है, वही उसे यीशु मसीह के दिन तक पूरा करेगा (फिलिप्पियों 1:6 वचन)। लेकिन तुलना की जाए तो कितने कम मसीही हैं, जिनमें पूरे विश्वास का दृढ़ निश्चय है; कितने कम मसीही हैं, जो यह कह सकें कि -- निश्चय, निःसंदेह, भलाई और करुणा जीवन भर मेरे साथ बनी रहेगी... और परमेश्वर के अनुग्रह से, मैं अन्ततः, स्वर्गीय राज्य में प्रवेश करूँगा ! ... यह थोड़े से लोग, जो प्रेरित और भविष्यद्वक्ता के विचारों से सहानुभूति रखते हैं, इनके पास बड़ा आनन्द,

बड़ी आशीष और ज्यादा अधिक मन का विश्राम होगा, जो कि दूसरों के पास नहीं होगा। आमीन। R2642,c1,p4

**भजन संहिता 25:9 निश्चय भलाई और करूणा जीवन भर मेरे साथ साथ बनी रहेगी; और मैं यहोवा के धाम में सर्वदा वास करूंगा॥**

नम्रता = दिव्य इच्छा के प्रति धीरज से समर्पण करना।
R2586, c1
जबकी परमेश्वर जिद्दी मनुष्यों को गलत विचारों में पड़ने और उन्हें फ़ैलाने में समृद्ध होने की अनुमति देते हैं, दूसरी तरफ, वे नम्र लोगों को न्याय की शिक्षा देते हैं और अपना मार्ग सिखाते हैं।
और नम्र लोगों के स्तर को परमेश्वर उठाते हैं, जिसके द्वारा वे सत्य को देखने और इसे गलत उपदेशों से अलग करने में सक्षम होते हैं। और हालाँकि, इस "बुराई के दिन" में हज़ार लोग इन गलत उपदेशों में गिर जाएंगे, लेकिन जो लोग नम्र हैं, इनकी सुरक्षा करने का संकल्प प्रभु ने लिया है, और प्रभु इनका मार्गदर्शन करेंगे और इन्हें गलत उपदेशों में गिरने से बचाएँगे, इसलिए ये गलत उपदेश नम्र लोगों को उखाड़कर फेंक नहीं पाएंगे।
R1268, c1, p3
जो नम्रता के इस सबक को सीखता है, वह दिव्य सेवा के लिए सबसे महत्वपूर्ण तयारी कर रहा है। आमीन। R5261, c1,p5

**भजन संहिता 25:12 वह कौन है जो यहोवा का भय मानता है? यहोवा उसको उसी मार्ग पर जिस से वह प्रसन्न होता है चलाएगा।**

इस जोखिम से भरे समय में, जब बुराई अपने सबसे घातक और धोखे के रूप में है, और जब बुराई आपके बहुत से झूठे भाइयों और बहनों के बीच में अपने सबसे सक्रिय प्रतिनिधियों को ढूंढ रही है, और इस प्रकार से, जब

सच्चाई के प्रति वफादारी आपके सबसे नाजुक सामाजिक बन्धनों को तोड़ देती है, और यहाँ तक कि, विश्वास के घराने में कभी जिनके साथ आप मिलकर चला करते थे, और उनके साथ आपके मीठे और नजदिकी सम्बन्ध थे, उनको भी तोड़ देती है - इस समय में। प्रिय भाईयों, हमारी आपके लिए यह सलाह है कि, हम आपसे पौलुस की सलाह पर ध्यान देने की विनती करते हैं --2 तीमुथियुस 3:14 "पर तू इन बातों पर जो तू ने सीखीं हैं और प्रतीति की थी, यह जानकर दृढ़ बना रह; कि तू ने उन्हें किन लोगों से सीखा था"; क्योंकि लिखा है (यूहन्ना 6:45) "वे सब परमेश्वर की ओर से सिखाए हुए होंगे"। आमीन। R1320, c2, p6

**भजन संहिता 25:14 यहोवा के भेद को वही जानते हैं जो उससे डरते हैं, और वह अपनी वाचा उन पर प्रगट करेगा।**

यह वचन इस प्रकार से लिखा गया है कि, लगता है जैसे कि परमेश्वर की वाचा को देखना या स्पष्टता से समझना एक बहुत महत्वपूर्ण मामला हो:और ऐसा है भी। यह महत्वपूर्ण मामला है, क्योंकि परमेश्वर की वाचा पूरी दिव्य योजना की चाबी है। परमेश्वर ने अब्राहम से जो वादा किया था, वाचा बाँधी थी कि, 'तेरे और तेरे वंश के द्वारा पृथ्वी के सारे कुल आशीष पायेंगे", इसमें प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से दिव्य अनुग्रह के सभी धन शामिल हैं...हमारी अभिषेक की गयी आँखों और प्रभु को पूरी तरह से समर्पित ह्रदय के साथ, और केवल उनकी इच्छा और उनके मार्ग को जानने के लिए पूरी तरह से चाहत रखते हुए, हम इस महान वाचा को देखते हैं, और देखो, यह महान वाचा तीन हिस्सों में महिमाय तरिके से हमारे सामने खुलती है: (1) पृथ्वी के सारे परिवारों को -- मनुष्य के परिवार के प्रत्येक सदस्य को आशीष मिलेगी। (2) इन दिव्य आशीषों को हर प्राणी तक पहुँचने का माध्यम अब्राहम का वंश बनेगा। (3) हम पाते हैं कि प्राथमिक मायने में तो यह वंश हमारे प्रभु यीशु मसीह हैं; लेकिन दूसरे मायने में यह वंश "दुल्हन -

-यानि मेम्ने की पत्नी" को भी शामिल करता है, जो कि प्रभु के साथ इस वाचा की और सभी दिव्य करुणा की संगी - वारिस होगी। आमीन। R2209,c1,p5; c2,p1

**भजन संहिता 27:1 यहोवा परमेश्वर मेरी ज्योति और मेरा उद्धार है; मैं किस से डरूं? यहोवा मेरे जीवन का दृढ़ गढ़ ठहरा है, मैं किस का भय खाऊं?**

"यह वचन प्रभु के सभी लोगों के लिए सही मानसिकता का सुझाव देता है, जो अभी विश्वास की अच्छी कुश्ती लड़ रहे हैं। यधपि स्थिति अन्धेरे से भरी और खतरनाक लग सकती है, हालांकि शत्रु कई गुणा हो सकती है और परेशानियाँ बढ़ सकती हैं, लेकिन यह वचन उनसे कहता है, मत डरो।" R2016, c2, top

इस सान्तवना को पूरे पवित्रशास्त्र में अलग--अलग तरीकों से व्यक्त किया गया है, जो कि हमारी सबसे बड़ी जरुरत के समय में अपनी पूरी आशीषित शक्ति के साथ हमारे काम में आता है,... विश्वास से पैदा हुआ और धीरज से मजबूत बना हुआ, साहस, सबसे मुश्किल कठिनाईयों के गहरे अन्धेरे और जंगली तूफानों और सबसे खतरनाक खतरों के बीच में नम्रता से हियाव बाँधकर पुकारता है, "यहोवा परमेश्वर मेरी ज्योति और मेरा उद्धार है; मैं किस से डरूं? यहोवा मेरे जीवन का दृढ़ गढ़ ठहरा है, मैं किस का भय खाऊं? " आमीन। R1915, c1, p1; c2,p3

**भजन संहिता 27:5 क्योंकि वह तो मुझे विपत्ति के दिन में अपने मण्डप में छिपा रखेगा; अपने तम्बू के गुप्त स्थान में वह मुझे छिपा लेगा, और चट्टान पर चढ़ाएगा।**

यह अच्छा होगा, विशेष रूप से सबसे बड़ी जरुरत के इस समय में, कि प्रभु के लोग मसीहियों के हथियार (विश्वास) के इस हिस्से के मूल्य पर ध्यान दें

और यह हो कि उनके विश्वास के दरवाजे, उनको परमप्रधान के गुप्त स्थान में अच्छी तरह से बन्द कर दें। जब बड़ी संख्या में और तेजी से निन्दाएँ होने लगें... जब उनके नामों को बुरा बताकर बाहर निकाला जाये... अहा, तब विश्वास की ढाल को कसकर पकड़ने का और भजन संहिता लिखने वाले के इस विजयी भाषा को अपनाने का सही समय है --जैसा की ऊपर के वचन में लिखा है--क्योंकि वह तो मुझे विपत्ति के दिन में अपने मण्डप में छिपा रखेगा; अपने तम्बू के गुप्त स्थान में वह मुझे छिपा लेगा, और चट्टान पर चढ़ाएगा। आमीन। R1788,c1,p5.

**भजन संहिता 27:10 मेरे माता पिता ने तो मुझे छोड़ दिया है, परन्तु यहोवा मुझे सम्भाल लेगा॥**

परमेश्वर के लोगों में हमारी गिनती होनी एक विशेष अधिकार है, लेकिन इसका मतलब बहुत ज्यादा है उसकी अपेक्षा में जो की बहुत लोग समझ नहीं पाते, बहुत ज्यादा है दोनों, उनके लिए और परमेश्वर के लिए। उनके लिए ये बताता है कि -वे परमेश्वर के पुत्र और उनके वारिस बन गए हैं प्रभु यीशु मसीह के द्वारा, की उन्होंने अपना पूरा समर्पण परमेश्वर को कर दिया है, ताकि वे उनके पुत्र के पदचिन्हों का अनुकरण कर सकें। परमेश्वर के लिए ये बताता है कि उनके सुन्दर वादों की पूर्ती होना प्रभु यीशु मसीह के द्वारा, दोनों इस जीवन में जो अभी जी रहे हैं और आने वाले जीवन में। ये प्रकट करता है कि अभी के जीवन में हमें, परमेश्वर का पिता वाला प्यार, उनकी देखभाल, उनका अनुशाशन, उनकी सलाह, उनकी शिक्षा, उनकी सुरक्षा और उनका प्रोत्साहन अन्त तक मिलेगा, और बाद में जब हम उनके शानदार उपस्थिति में स्वीकारे जायेंगें तब अनन्त समय के लिए हमे आराम और आनन्द और शान्ति मिलेगी। आह! कितना धन्य है परमेश्वर के लोग होना, अभी के जीवन में भी, उनके अनुग्रह के पुरस्कार की संगड़ना करना

परे है या सोच से बाहर है। R. 1787, c.2, p. 5; R. 1788, c.1, p.1. आमीन

**भजन संहिता 27:14 यहोवा की बाट जोहता रह; हियाव बान्ध और तेरा हृदय दृढ़ रहे; हां, यहोवा ही की बाट जोहता रह!**

हम देखते हैं कि प्रभु ने यह घोषणा की है कि, उनके लोगों को विशेष रूप से सांसारिक सुरक्षा नहीं मिलेगी; और यदि उनके ज्ञान के अनुसार हमें किसी भी तरह से चोट पहुँचाना और शर्मिन्दा करना, जैसा कि हमारे स्वामी के साथ किया गया था, सर्वोत्तम है, तो फिर हमें अच्छा साहस रखना है, और वे हमारे हृदयों को मजबूत करेंगे, क्योंकि हम उनपर भरोसा करते हैं, और हमें उनमें दृढ़ विश्वास है। हम जानते हैं कि, वे इतने बुद्धिमान हैं कि कोई भी गलती नहीं कर सकते, और अवश्य इन सब की अनुमति के पीछे एक उद्देश्य, एक कारण होना चाहिए, चाहे जो भी हो। हम निश्चित रूप से यह जानते हैं कि सन्त लोग प्रभु की दृष्टि में अनमोल हैं -- उनके आँख की पुतली हैं; और इस प्रकार से हम जानते हैं कि सब बातें मिलकर हमारे लिए भलाई को ही उत्पन्न करेगी। R5330,c2,p7 आमीन।

**भजन संहिता 29:11 यहोवा अपनी प्रजा को बल देगा; यहोवा अपनी प्रजा को शान्ति की आशीष देगा॥**

इस वचन में "बल" का मतलब है बड़ी मात्रा में "साहस" । आइए हम विश्वासयोग्य होकर उनकी प्रजा बन जाएँ, और पुरे हृदय से इस साहस को पाने की चाहत करें और वादे के अनुसार मिले साहस को पूरी वफ़ादारी से उपयोग में लाएं। वादा करने वाला विश्वसनीय है, वो अपने वादे को जरूर पूरा करेंगे । इसलिए यदि आप अपने हुनर को पूरी वफ़ादारी के साथ उपयोग में नहीं ला पा रहे हैं तो गलती आपकी है, परमेश्वर कि नहीं। या

तो परमेश्वर के कार्य आपके ह्रदय के करीब पूरी तरह से नहीं है या फिर आपको परमेश्वर ने जो साहस दिया उसे पूरी तरह से आपने उपयोग में नहीं लाया है। “यहोवा अपनी प्रजा को बल देगा” -- अपने भरोसेमन्द, विश्वसनीय दासों को --जो कि प्रभु को समर्पित अपने सारे हुनर को परमेश्वर की प्रशंसा के लिए उपयोग में लाते हैं, फिर चाहे ये हुनर कितने ही कम हो या ज्यादा। R. 3697, c.1, p.2 आमीन

**भजन संहिता 31:20 तू उन्हें दर्शन देने के गुप्त स्थान में मनुष्यों की बुरी गोष्ठी से गुप्त रखेगा; तू उनको अपने मण्डप में झगड़े-रगड़े से छिपा रखेगा॥**

वाह! ये छिपने का स्थान कितना बहुमूल्य है । सभी व्यकुलताओं के बीच में ये जगह हमें कितना आराम और ताजगी देती है । ये व्याकुलता या उत्तेजना पूरी दुनिया को और ख़ास कर क्रिस्टेन्डम को या बेबीलोन को प्रभावित कर रही है । हमें ख़ास कर मनुष्यों की मुर्खता और घमण्ड से विश्राम मिलता है । दुनिया के लोग समाज को सुधारने का असफल प्रयास अपनी-अपनी बुद्धि से कर रहें हैं । हमें मनुष्यों की बुरी गोष्ठी से, उनके रगड़े-झगडे से विश्राम मिलता है । वे लोग मनुष्यों के रीति रिवाजों के भ्रम में फंसे हैं । और सच्चाई और धार्मिकता के सिद्धान्तों को सुलझाने या विकसित करने का व्यर्थ प्रयत्न कर रहे हैं । हमें यहाँ पर विश्राम, शान्ति, रोशनी और ऐसा आनन्द मिलता है जिसे न तो संसार हमें दे सकता है और न ही हम से छिन सकता है । R. 1788, c.1, p.3. आमीन

**भजन संहिता 31:24 हे यहोवा पर आशा रखने वालों हियाव बान्धो और तुम्हारे ह्रदय दृढ़ रहें!**

हम जब भी दुनिया के लोगों से सम्पर्क में आते हैं तो मानो ऐसे लगता है कि हमारे सरलता से किए गए भरोसे के द्वारा मिली खुशी का उपहास कर रहें हैं । फिर चाहे वे हमें एक भी शब्द न कहे । हमारा हौसला बुलन्द होना चाहिए और हमारी आशा प्रभु में होनी चाहिए । जैसा कि ये वचन भी कहता है... "हे यहोवा पर आशा रखने वालों हियाव बांधों और तुम्हारे ह्रदय दृढ़ रहें!" लेकिन ये साहस उचित सिद्धांतों पर आधारित होना चाहिए । हमारे हौसलें का आधार परमेश्वर का/par विश्वाश होना चाहिए । अपनी शेखी के लिए नहीं लेकिन ऐसा हौसला होना चाहिए जो श्रेष्ठ हो और परमेश्वर का मनभावना हो । हमारे हौसलें का मूल स्त्रोत ये होना चाहिए कि -- परमेश्वर ने वादा किया है और यह कि परमेश्वर हम पर नज़र रखें हैं और ये परमेश्वर की तमन्ना है कि हम उनके पुत्र के राज्य में उनके साथ साँझा वारिस हों । परमेश्वर परिक्षाओं के द्वारा केवल हमारी वफादारी को जाँच रहें हैं और ये देखना चाहते हैं कि क्या हम विश्वासी अपने आप को शाबित कर पा रहें हैं? और ये भी जो भी हिम्मत हमारे साथ है वो हमे सभी कार्यों को उचित रीति से करने में भी होनी चाहिए । R. 5329, c.2, p.5; R. 5330, c.1, p.4. आमीन

**भजन संहिता 32:8 मैं तुझे बुद्धि दूंगा, और जिस मार्ग में तुझे चलना होगा उसमें तेरी अगुवाई करूंगा; मैं तुझ पर कृपा दृष्टि रखूंगा और सम्मत्ति दिया करूंगा।**

सांसारिक माता पिता आज्ञाकारी और तुरन्त वश में आजानेवाल बच्चों से बहुत खुश होते हैं, जिसके लिए फटकार वाली नज़र से देखने से ही उसकी बुराइयों को छांटा जा सकता है। इसी तरह हमारे स्वर्गीय पिता भी ये घोषणा करते हैं कि जो उनके वचन से कांपते हैं, उसी को वे स्वीकार करते हैं । Isaiah 66:5 vachan

ऐसे ही लोग अपने चरित्र के निर्माण में परमेश्वर का सहयोग करते हैं, अपनी खुद की खराबियों पर ध्यान देते हैं। और उन्हें सही करने का प्रयाश करते हैं। अपने पिता के निर्देशों की आवाज़ को कान लगाकर सुनते हैं। उनके उपदेशों पर ध्यान देते हैं और उनकी प्यारी फटकार पर ध्यान देते हैं और सदैव अपने पिता की मुस्कान भरी मंजूरी की खोज में रहते हैं...इसी श्रेणी के लोगों के लिए जो की आज्ञाकारी और सतर्क है, हमारे परमेश्वर कहते हैं कि "मैं तुझ पर कृपा दृष्टि रखूंगा और सम्मत्ति दिया करूंगा..., वैसे लोग जिन्हें राह दिखाने के लिए लगातार चाबुक मारनी पड़े, वे जय पाने वालों की श्रेणी में नहीं हो सकते। E. 233, 234, top. आमीन

**भजन संहिता 34:7 यहोवा के डरवैयों के चारों ओर उसका दूत छावनी किए हुए उन को बचाता है।**

छावनी का अर्थ है --लगातार स्थायी उपस्थिति। R. 3441, c.1, p.2.
सुसमाचार के युग के दौरान ये परमेश्वर की इच्छा है कि आत्मिक इस्राएलियों का घराना विश्वास पर चले, आँखों देखे पर नहीं चले, और इसिलए जब चर्च पूरी तरह से स्थापित हो गयी, स्वर्गदूतों का दिखलाई पड़ना; बाहरी रूप से प्रगट होना इत्यादि, पूरी तरह से नहीं उपयुक्त होगा। मसीह के पीछे चलने वालों के पास बाईबल है और पवित्र स्वर्गदूतों की अदृश्य मण्डली नियोजित की गई है, उनके हितों, रुचियों को पहले से प्रबन्ध करने के लिए और उनके कार्यों में दिव्य रीति से मार्ग दर्शन करने के लिए और उनकी चौकसी करने के लिए ये बात सच्ची है, हमे बड़ी दिलासा देने वाली है। यदि हमारा ये विचार होता की परमेश्वर खुद निजी तौर पर ये सब कुछ स्वंय ही हमारे लिए कर रहे हैं, तो हम ये भी सोच सकते थे कि निश्चय ही वे हमे भूल गए हैं। लेकिन उनके वचनों का आश्वासन है कि उनकी अनुमति के बैगर हमारे सर का एक बाल भी नहीं गिरेगा। हमारा मन इस हकीकत को जानकर विश्राम कर सकता है कि परमश्वर मसीह में अपने

उद्देश्यों को अपने बच्चों के लिए पवित्र स्वर्गदूतों को नियोजित करके पूरा करते हैं। R. 5635, c.1, p.1; c.2, p.2. आमीन

**भजन संहिता 34:8 परखकर देखो कि यहोवा कैसा भला है! क्या ही धन्य है वह पुरूष जो उसकी शरण लेता है।**

जिनको केवल उत्सुकता के लिए यह जानना है कि परमेश्वर की मेज पर क्या -क्या अच्छी चीज़ें पायी जाती हैं, वे इस बात को कभी नहीं जान सकते की यहोवा कैसा भला है? केवल वही जो सच्चे ह्रदय से आते हैं और खुद चखकर देखते हैं, वही जान सकते हैं की यहोवा कैसा भला है। परमेश्वर की मेज पर "गुप्त मन्ना" है... । परमेश्वर की इस मेज में से केवल वही लोग खा सकते हैं जो बाकी की सारी मेजों को छोड़ देने की चाहत रखते हैं। ऐसे लोगों को ही परमेश्वर की इस मेज पर आने का न्योता मिलता है–जिस पर आत्मिक आशीषों का भोज है, परमेश्वर के साथ सम्पर्क और मेल-जोल का भोज है, परमेश्वर के गुड़ रहस्यों के ज्ञान का भोज है, बहुत ही बड़े और बहुमूल्य वादें हैं, परमेश्वर के उद्धार की योजना में उनके साथ सहयोग करने का आनन्द है... । इतने बड़े भोज के उत्सव में केवल <u>अत्यन्त प्रशंसक ही, चाहे जाने के योग्य हैं</u> --मतलब वे जो इस अनुग्रह का आनन्द लेने के लिए बाकी की सारी चीज़ों को खुशी से छोड़ देते हैं। R. 1957, c.2, p.4,6. आमीन

**भजन संहिता 34:15 यहोवा की आंखे धर्मियों पर लगी रहती हैं, और उसके कान भी उसकी दोहाई की ओर लगे रहते हैं।**

क्या हम अपने सभी परिक्षाओं और जटिलताओं को प्रार्थना में अपने परमेश्वर तक न ले जाएँ? हाँ, हाँ, सही में हम ऐसा कर सकते हैं। हैरानी में या गम में पड़े मनुष्य को अपनी सारी बातें परेमश्वर से कह देने का विशेष

अधिकार से ज्यादा और कुछ भी नहीं, जो उसे बड़ी दिलासा दे सकें। हमारे परमेश्वर के कान "उनके छोटे बच्चों" की दुहाई की ओर हमेशा लगे रहते हैं और उनको सारी बातें सच-सच बताकर और उनकी हमारे प्रति रूचि को महसूस करके ये एहसास हमें ताजगी देता है और प्रसन्न कर देता है। ऐसा करने से हमें परमेश्वर का वह वादा याद आ जाता है जिसमें उन्होंने कहा है कि -- "मैं तुझे कभी न छोड़ूंगा, और न कभी त्यागूंगा।" हमें उनका ज्ञान, उनका प्रेम याद आता है... "अपना सारा बोझ यहोवा पर डाल दे वह तुझे सम्भालेगा; वह धर्मी को कभी टलने न देगा॥" क्योंकि उसको तुम्हारा ध्यान है, यह वादा याद आ जाता है। जब हम परमेश्वर पर निर्भर करते हैं तब हम ज्यादा आसानी से अपने घुटनों पर खड़े होकर मजबूती से, खुशी से और ज्यादा भरोसे से उठ पाते हैं। हमारा रिश्ता प्रभु के साथ और हमारा वार्तालाप और भी गेहरा होता जाता है, बजाये उसके कि यदि हमने अपने सभी मामलों में खुद से सम्भालने की चेष्टा की होती। R. 1999, c.2, p.5 आमीन

**भजन संहिता 34:18 यहोवा टूटे मन वालों के समीप रहता है, और पिसे हुओं का उद्धार करता है॥**

घर, जमीन और ध्यान पूर्वक से संचय की हुई सम्पति कानून के एक हथोड़े से ओझल हो सकती है। पुराने भरोसेमन्द मित्र अचानक से ठन्डे पड़ सकते हैं। और अपनी पीठ आप के ऊपर घुमा सकते हैं। यहाँ तक कि दुश्मन भी बन सकते हैं। जिस घर से आप प्रेम करते हैं, अवश्य कभी टूट सकता है, परिवार बिखर सकता है या मौत में छिप सकता है। जो प्रेम घर की वेदी पर चमकता था, वो टिमटिमाते हुए बुझ भी सकता है। कितनी ऐसे हैं जिनकी जवानी की सभी ऊँची आशाएँ और आराम का जीवन खाक में मिल जाता है, केवल चन्द वर्षों या महीनों में। ऐसे सभी लोगों को परमेश्वर का यह वचन (यहोवा टूटे मन वालों के समीप रहता है, और पिसे हुओं का

उद्धार करता है), एक खास शक्ति से आकर्षित करना चाहिए। जब उन्हें अपने बोझ और टूटे मन को लेकर परमेश्वर अपने पास आने का बुलावा देते हैं, तब परमेश्वर का प्रेम और उनके बहुमूल्य वादे गिलियाद की सुखद मलहम की तरह है उन सब के लिए जो जीवन के संघर्ष में उदास और निराश होकर, मसीह के पास विश्राम और चैन जीवन और चंगाई के लिए आते हैं। R. 5862,
c.1, p.3,4. आमीन

**भजन संहिता 34:19 धर्मी पर बहुत सी विपत्तियां पड़ती तो हैं, परन्तु यहोवा उसको उन सब से मुक्त करता है।**

हमारे जीवन के प्रतिदिन के अनुभवों का हमारे लिए एक महत्वपूर्ण लक्ष्य है, और इन अनुभवों को हम किस प्रकार स्वीकार करते हैं, ये हमारे लिए गम्भीर चिन्ता का विषय होना चाहिए। क्योंकि जिस प्रकार से हम इन अनुभवों को उपयोग में लायेंगें उसी के अनुसार हमें या तो सफलता मिलेगी या इसके विपरीत दुःख मिलेंगें और परिक्षाएं या तो हमें आशीष का फल देगी या श्राप का फल देगी। हो सकता है कि दुःख और संताप आएंगें, बार-बार आएंगें। एक बाढ़ की तरह आयेंगें, लेकिन परमेश्वर हमारा शरणस्थान होंगें और हमारी शक्ति बनेंगें। उस हर एक अनुभव में जो उनकी अनुमति से हमारे लिए रचा गया है। जिस प्राणी ने दुःख और परेशानी का अनुशासन कभी नहीं जाना है वो आनन्द और परमेश्वर के प्रेम और उनकी सहायता के बहुमूल्यता को भी कभी नहीं जान सकता। जबरदस्त दुःख और संताप का ही मौसम होता है, जब हम परमेश्वर के निकट खींचें चले जाते हैं और ख़ास कर परमेश्वर भी हमारे करीब आ जाते हैं। R. 5802, c.1, p.4,6. आमीन

**भजन संहिता 37:4,5 यहोवा को अपने सुख का मूल जान, और वह तेरे मनोरथों को पूरा करेगा॥ अपने मार्ग की चिन्ता यहोवा पर छोड़; और उस पर भरोसा रख, वही पूरा करेगा।**

जब हम लगातार भरोसा यहोवा पर रखते हैं और प्रत्युत्तर में उनके उत्साहपूर्वक अनुकूल देनों को पाते हैं, जिनके द्वारा हमारे जीवन में उनसे जान पहचान, घनिष्टता में बढ़ जाती है, तब ही हम यहोवा को अपने सुख का मूल जानते हैं। इसके बाद हमारे मार्ग में कितना भी अँधेरा हो--ये ख्याल ही कि हमारी सुरक्षा के लिए परमेश्वर हमेशा हमारे साथ हैं--उनकी दिव्य सुरक्षा हमेशा हमारे साथ है, उनके लिए परमेश्वर अकेले ही कुल मिलाकर न्यारे हैं। उनकी व्यवस्था उनकी खुशी है, उनसे मित्रता और प्रेम उनका सच्चा जीवन हैं। जब ह्रदय परमेश्वर में केन्द्रित हो जाता है, तो बड़े ही स्वभाविक तौर से हम अपने मार्ग की चिन्ता यहोवा पर छोड़ देते हैं...निश्चय ही ऐसे लोगों के पास उनके मनोरथ (ह्रदय की मनोकामनाएँ) हैं। जिन्हें परमेश्वर पूरी करेंगें और कोई भी भली वस्तु उनसे रोकी न जायेगी। R. 5803, c.2, p.2,3,5. आमीन

**भजन संहिता 37:23 मनुष्य की गति यहोवा की ओर से दृढ़ होती है, और उसके चलन से वह प्रसन्न रहता है।**

बहुत से परमेश्वर के लोगों में कमजोरी का मूल स्त्रोत यह होता है कि वे इस वादे और इसके समान अन्य वादों को विश्वास के द्वारा अच्छी तरह से कसकर पकड़ नहीं पाते (समझ नहीं पाते) क्योंकि जिस अनुपात में उनके पास यह विश्वास होगा और वे इन वादों को पकड़ेंगें, उसी अनुपात में इन वादों के द्वारा संभलते हुए ऊपर उठते जायेंगें । और निशाने के चिन्ह की और बढ़ने के लिए उत्साहित होंगें। वे लोग परम आनन्दित होते हुए इस सकेत मार्ग पर चलते रहेंगें, फिर चाहे ये मार्ग कितना भी काँटों से भरा हो

और सकरा हो और ऊंचा-नीचा (खुदरा) हो क्योंकि वे परमेश्वर के प्रेम और ज्ञान में अपना दृढ विश्वास रखेंगें। और वे लोग इस बात पर भी दृढ भरोसा करते हैं कि जिसने (परमेश्वर ने) उनमे (हममें) एक अच्छा कार्य जो आरम्भ किया है, वे उसे पूरा भी कर रहें हैं और उन्हें (हम सबको), सभी अनुभवों के द्वारा यह मिल रही है, जिसमें दिव्य ज्ञान की आशीषों और दृष्टि के अनुसार अन्त में उनका लाभ ही होने वाला है। R. 3157, c.1, p.1. R. 2762, c.2, p.4. आमीन

**भजन संहिता 37:24 चाहे वह गिरे तौभी पड़ा न रह जाएगा, क्योंकि यहोवा उसका हाथ थामे रहता है॥**

ये आश्वासन की परमेश्वर के बच्चे कभी-कभी ठोकर खाएंगें अपनी मार्ग में, लेकिन इसका अर्थ उनके लिए ये कभी भी नहीं है कि वह पूरी तरह से गिर जायेंगें; क्योंकि उसका हाथ सदा परमेश्वर थामे रहते हैं। हमें इस बात को कभी भी नज़रअन्दाज़ नहीं करना हैं। ये विचार कितना सुकून देने वाला है, कितनी अच्छी गणना है कि परमेश्वर के लोग अपनी या एकदूसरे से सम्बंधित अत्यन्त निराशाओं से छुड़ाए जायेंगें। कुल मिलाकर दिमाग में रखने वाला महत्वपूर्ण विचार ये है कि - 1) क्या में अभी भी परमेश्वर का हूँ? 2) क्या में अभी भी बहुमूल्य लहू पर भरोसा कर रहा हूँ? 3) क्या में अभी भी परमेश्वर और उनके धार्मिक मार्गों के लिए समर्पित हूँ? यदि ये सभी सवालों का जवाब हाँ में है, तो हम अभी भी ये महसूस कर सकते हैं कि हम परमेश्वर के बच्चे हैं और हमारे हाथ सदा उनके हाथ में है, पवित्र आत्मा जो हममें उत्पन्न हुई थी वो अभी भी नष्ट नहीं हुई है और परमेश्वर की मर्जी यही है कि हम हर ठोकर से जल्दी से जल्दी सम्भल जाएँ और जिन मुश्किलों और परिक्षाओं ने हमें ठोकर दिलायी है, उन्हें अच्छी तरह से परख लें। और भविष्य में उन परेशानियों में अपने चरित्र को दृढ करके लगातार मजबूत बनते जाएँ। R. 3157, c.2, p.1. आमीन

**भजन संहिता 37:25 मैं लड़कपन से लेकर बुढ़ापे तक देखता आया हूं; परन्तु न तो कभी धर्मी को त्यागा हुआ, और न उसके वंश को टुकड़े मांगते देखा है।**

"यहोवा पर भरोसा रख, और भला कर;... और सच में तुझे खिलाया जायेगा"। ये वादे पक्के हैं, और भला करते हुए और भरोसा रखते हुए हम आनन्दित भी हो सकते हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि, आपके पास कोई व्यवस्था से सम्बन्धित परिक्षाएं और परेशानियाँ और निराशाएं और उदासी नहीं होगी। हो सकता है कि, ये बिल्कुल वो अनुभव हो, जिनकी हमें अपनी मसीही चरित्र को नम्रता, धीरज, भाईचारे और प्रेम में बढ़ाने के लिए आवशयकता है। सारपत नगर की विधवा की तरह आपका भोजन और तेल कम हो सकता है; परन्तु परमेश्वर जानते हैं और यदि आप उनपर भरोसा करें और साथ में जो कुछ कर सकते हैं, करें, तो परमेश्वर आपकी सांसारिक घटी के साथ आत्मिक आशीषों को मिलाकर इनकी पूर्ति करेंगे। इन जरुरी चीज़ों को परमेश्वर हमारे अपने परिश्रम के द्वारा, या दोस्तों की उदारता के द्वारा, या सार्वजनिक प्रावधानों के माध्यम से प्रदान कर सकते हैं। हालांकि हमारी इच्छा और कोशिश यह रहनी चाहिए कि हमें ये वस्तुएँ परमेश्वर हमारे अपने परिश्रम के द्वारा प्रदान करें, लेकिन परमेश्वर के देने के दूसरे तरीकों को तुच्छ नहीं मानना है और न ही अस्वीकार करना हैं। इनमें से कोई भी तरिका भीख मांगना नहीं है। भेंट स्वरुप दी गई मदद को स्वीकार करना, भीख माँगना नहीं है। R 2021, c2, p2 आमीन।

**भजन संहिता 45:10,11 हे राजकुमारी सुन, और कान लगाकर ध्यान दे; अपने लोगों और अपने पिता के घर को भूल जा; और राजा तेरे रूप की चाह करेगा। क्योंकि वह तो तेरा प्रभु है, तू उसे दण्डवत कर।**

क्या कभी विवाह का प्रस्ताव इससे अधिक नाजुक और सुन्दर शब्दों में प्रस्तुत किया गया था? आश्चर्य के साथ, मैं इसे बार-- बार पढ़ता हूँ। निश्चित रूप से इसका अर्थ, इससे कम कुछ नहीं हो सकता है: मुझे राजाओं के राजा ने अपने शाही पुत्र की दुल्हन बनने के लिए आमंत्रित किया है -- जो कि उनके एकलौते पुत्र हैं और सभी वस्तुओं के वारिस हैं। और जब से उनकी धार्मिकता के वस्त्र को मुझपर डाला गया है, जो मेरे अपने वस्त्र के सभी अधर्म को छुपाता है, मैं वास्तव में राजा की आँखों में सुन्दर माना जाता हूँ, मुझे बताया गया है कि वह मुझे अपनी दुल्हन बनाना चाहते हैं-- यदि मैं अपने प्रियजनों और मेरे पिता (आदम) के घर को भूल जाऊँ-- आमतौर पर दुनिया को, इसकी सभी उम्मीदों, उद्देश्यों और महत्वकांक्षाओं के साथ। R1494,c2,p5 आमीन।

**भजन संहिता 46:1,2 परमेश्वर हमारा शरणस्थान और बल है, संकट में अति सहज से मिलने वाला सहायक। इस कारण हम को कोई भय नहीं चाहे पृथ्वी उलट जाए, और पहाड़ समुद्र के बीच में डाल दिए जाएं;**

प्रभु के विश्वासी लोगों को इस वचन को अपने मन में एक आरामदायक और निरन्तर शक्ति प्रदान करने वाले के रूप में हमेशा ध्यान में रखना चाहिए। यह वचन नए नियम में प्रेरितों के द्वारा बताये गए रोमियों 8:28 वचन से तालमेल रखता है, जो कि, यह कहता है "जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती है; अर्थात उन्हीं के लिये जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं"। R3232,c2,p2 आमीन।

**भजन संहिता 55:22 अपना बोझ यहोवा पर डाल दे वह तुझे सम्भालेगा; वह धर्मी को कभी टलने न देगा॥**

हमारे चरित्र को गढ़ने के लिए हमारे अन्दर अनुग्रह के कुछ कार्य हैं, जिन्हें जीवन के केवल कठिन अनुभव ही पूरा कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, यदि हम कभी-कभी ऐसी समस्याओं का सामना न करें जो कि हमारे हुनर को असफल कर दें, तो हम अपनी समझ पर ज्यादा निर्भर करते। यह तब होता है, जब हम "उन चीज़ों को छूने से डरते हैं, जिनमें अधिक उलझन होती है", ताकि परेशानी में हम उनके पास आएं, जिन्होंने दया से कहा है कि, “अपना बोझ यहोवा पर डाल दे वह तुझे सम्भालेगा”, और इस प्रकार से हम अपना सारा नियंत्रण, प्रभु को दे देते हैं। या हम शरीर पर बहुत भरोसा रखने के इच्छुक हो सकते हैं, अगर शरीर ने हमें कभी असफल न किया होता, और निराशाओं ने हमें प्रभु के पास न लाया होता, ताकि हम उनके पंखों की छाँव में आश्रय पा सकें। या हम अनिश्चित धन पर भरोसा करना सीखते, यदि हमारी पृथ्वी की सम्पत्ति को कीड़ा और काई न बिगाड़ते, और चोर सेंध लगाकर न चुराते। या हम सांसारिक मित्रता और प्रियजनों से ही सन्तुष्ट रहते यदि उन्हें खोकर कभी-कभी हमें प्रभु के साथ उनकी सान्तवना की मिठास को साबित करने के लिए अकेला न छोड़ा जाता। R2130,c1,p2 आमीन।

**भजन संहिता 59:16 परन्तु मैं तेरी सामर्थ्य का यश गाऊंगा, और भोर को तेरी करूणा का जयजयकार करूंगा। क्योंकि तू मेरा ऊंचा गढ़ है, और संकट के समय मेरा शरणस्थान ठहरा है।**

परमेश्वर के प्रति यह निकटता, जिसमें उनके "अत्यंत चूने हुए" लोगों को इकट्ठा किया जाएगा, उनकी सुरक्षा का स्रोत होगा। और दूसरे लोग बल के इस महान गढ़, या किला या शरणस्थान या ऊँची मीनार से जिस अनुपात में दूर रहेंगें उसी अनुपात में वे खतरों में होंगें ...ओह, कितना अच्छा होगा की हम इस विचार को हमारे दिमाग में ठीक से बैठा सकें! ...कि हमारे प्रभु अभी के समय में धरती के सभी मामलों की देखभाल पहले की तुलना में

कहीं अधिक व्यावहारिक अर्थ में कर रहे हैं। और क्या हमने कटनी के बीते हुए वर्षों में कलीसिया की ओर उनकी कृपा नहीं देखी है। और क्या हम भव्य समाप्ति के लिए उनकी, अपनी मंगेतर के मामलों की निरंतर निगरानी पर संदेह कर सकते हैं? "जिसने हम में अच्छा काम आरम्भ किया है, वही उसे पूरा करने में भी सक्षम हैं। ... "जिसने पहली बार मार्गदर्शन किया वह आपका अभी भी मार्गदर्शन करेंगे; शांत रहो और उनकी इच्छा में डूब जाओ"। R4379, c2,p2,4 आमीन।

**भजन संहिता 63:3 क्योंकि तेरी करूणा जीवन से भी उत्तम है मैं तेरी प्रशंसा करूंगा।**

जो लोग अभी के जीवन से प्रेम करते हैं, वे अपने होठों को बन्द कर देते हैं और अपने आपको परमेश्वर की करुणा के बारे में बोलने से रोकते हैं; लेकिन जो लोग अपनी वाचा के प्रति वफ़ादार हैं, और परमेश्वर के अनुग्रह को "जीवन से भी उत्तम" समझकर, उनकी सराहना करते हैं, वे परमेश्वर की स्तुति, प्रशंसा करने के लिए, कोई भी सांसारिक किमत चुकाने को तैयार रहेंगे। R2853,c1,top

हमें अवश्य परमेश्वर की प्रेम भरी करुणा को पृथ्वी के जीवन से बेहतर मानकर उनकी प्रशंसा करनी चाहिए, अन्यथा हम उनके योग्य नहीं हैं और न ही उन लोगों में से हैं, जिन्हें वे ढूंढ़ रहे हैं। जब हम परमेश्वर के साथ संगति और अनन्त आशाओं की परस्पर तुलना...सांसारिक प्रेम और पारिवारिक सम्बन्धों और सांसारिक महत्वाकांक्षाओं और सुखों से करते हैं, तो बाद वाला पहले की तुलना में काफी महत्वहीन प्रतीत होता है, जैसे कि शुद्ध सोने की तुलना में कूड़ा। और इस दृष्टिकोण से हम ख़ुशी से सब कुछ त्याग देते हैं, परमेश्वर के अनुग्रह के लिए जीवन को भी दे देते हैं। R2852,c1,top आमीन।

**भजन संहिता 73:24 तू सम्मति देता हुआ, मेरी अगुवाई करेगा, और तब मेरी महिमा करके मुझ को अपने पास रखेगा।**

कितने आश्चर्यजनक रूप से परमेश्वर ने अपने लोगों का मार्गदर्शन किया है। उनके बच्चे हमेशा उनकी निरन्तर देखभाल में रहते हैं।उनसे वह कोई अच्छी वस्तु रख न छोड़ेगा और यदि वे आज्ञाकारी रहे तो सब बातें मिलकर उनके लिए भलाई ही को उत्पन्न करेगी। जिसने कई वर्षों से, धूप और छाया के माध्यम से, मुस्कराहट और आंसुओं के माध्यम से, सुखदाई जल के झरनों और तूफानों और लहरों के माध्यम से प्रभु पर भरोसा किया है, उनमें से कौन होगा जिसने परमेश्वर की सदा बने रहने वाली विश्वसनीयता और उनके बहुमूल्य वादों की सत्यता को साबित न किया होगा! R5538,c1,p8
हम एक सलाहकार और एक बहुत बुद्धिमान व्यक्ति की आवश्यता की सराहना करते हैं। हम पाते हैं कि, यहाँ तक कि, सर्वोत्तम सांसारिक सलाह का मूल्य केवल तभी है, जब इसे दिव्य सलाहकार के द्वारा निर्देशित किया जाए...इसके अलावा, यह आश्वासन है कि, यह दिव्य सलाह हमारे लिए पर्याप्त होगी, ताकि अन्ततः, इस सलाह पर ध्यान देकर, हम अपनी दौड़ के अन्त में अनन्त इनाम तक पहुँच जायेंगे। R2240,c1,p5 आमीन।

**भजन संहिता 73:26 मेरे हृदय और मन दोनों तो हार गए हैं, परन्तु परमेश्वर सर्वदा के लिये मेरा भाग और मेरे हृदय की चट्टान बना है॥**

भारी परिक्षाओं के मौसम में, अंधेरा वास्तव में प्राणों पर इतना गहरा हो सकता है कि, जैसे हमारे प्रिय प्रभु के मामले में हुआ, वह अंधेरा आशा के सितारों को लगभग ढक दे; फिर भी यदि प्रभु की तरह, हम यहोवा की सर्वव्यापी भुजा को पकड़े रहें और नम्रता से यह कहें, "फिर भी, मेरी इच्छा नहीं, परन्तु आपकी इच्छा पूरी हो", तो उनका अनुग्रह सदा काफी होगा; और इस भजन संहिता के साथ हम भी यह कह सकेंगे, “मेरे हृदय और मन दोनों

तो हार गए हैं, परन्तु परमेश्वर सर्वदा के लिये मेरा भाग और मेरे हृदय की चट्टान बना है"; और प्रभु के साथ, हमारा हृदय भी यही ज़वाब देगा कि, -- "मेरे पिता ने जो प्याला मुझे दिया है, क्या मैं उसे न पीयूँ"? R1802,c2,top आमीन।

**भजन संहिता 84:11 क्योंकि यहोवा परमेश्वर सूर्य और ढाल है; यहोवा अनुग्रह करेगा, और महिमा देगा; और जो लोग खरी चाल चलते हैं; उन से वह कोई अच्छा पदार्थ रख न छोड़ेगा।**

हमारा यह वचन दाऊद की श्रेणी के लोगों के लिए, प्रिय लोगों के लिए, अभिषेक किये हुए लोगों के लिए, मसीह की देह के सदस्यों के लिए, एक बड़ा प्रोत्साहन है। इनके लिए प्रभु परमेश्वर सूर्य और ढाल दोनों हैं; वह न केवल इन्हें ज्योतिमान करते हैं, बल्कि वे उनपर जो आशीषें उंडेलते हैं, उनमें से एक से भी उन्हें चोट नहीं लगने देते। वह उन्हें सभी शत्रुओं और उन सभी वस्तुओं से ढ़ाल की तरह बचायेंगे, जो किसी भी तरिके से इन्हें कोई चोट पहुँचाने की कोशिश करेंगी; जो परमेश्वर से प्रेम रखते हैं और उनके उद्देश्यों के अनुसार बुलाए गए हैं, उनके लिए सभी बातें मिलकर, भलाई ही को उत्पन्न करेगी। ऐसे धन्य आश्वासन के साथ, फिर हम महिमामय इनामों में हिस्सा पाने का भरोसा रखते हुए, जिन्हें परमेश्वर ने अपने विश्वासी लोगों को देने का वादा किया है; भविष्य की ओर ख़ुशी से और दृढ़ भरोसे के साथ आगे बढ़ सकते हैं। R4219,c2,p4 आमीन।

**भजन संहिता 89:34 मैं अपनी वाचा न तोड़ूंगा, और जो मेरे मुंह से निकल चुका है, उसे न बदलूंगा।**

प्रभु की प्रत्येक विशेषता का अनुकरण करने की कोशिश करते हुए और प्रभु के चरित्र की समानता में पूरी तरह से ढलने की कोशिश करते हुए, आइये

इस वचन में जो पाठ है, उसे हम विशेष रूप से अपने मन में रखें, परमेश्वर अपने कार्यों के प्रति विश्वासयोग्य है। और आइये, हम भी, उनके लोग होने के नाते, उनकी मदद और अनुग्रह से यह संकल्प लें कि, हम भी प्रतिदिन इस गुण में, उनकी समानता में बढ़ेंगे -- ताकि हम भी, अपनी वाचाओं के सम्बन्ध में खुद के बारे में यह कह सकें, जैसा कि प्रभु स्वंय के बारे में कहते हैं -- "मैं अपनी वाचा न तोड़ूंगा, और जो मेरे मुंह से निकल चुका है, उसे न बदलूंगा"। R3109,c2,p2 आमीन।

**भजन संहिता 91:1 जो परमप्रधान के छाए हुए स्थान में बैठा रहे, वह सर्वशक्तिमान की छाया में ठिकाना पाएगा।**

प्रिय भाइयों, परमप्रधान का यह गुप्त स्थान, परमेश्वर के साथ घनिष्ठ सहभागिता और मिलाप की जगह है, जहाँ हम प्रार्थना के धन्य विशेष अधिकार के द्वारा और उनके बहुमूल्य वचनों पर और उनके वादे अनुसार ईश्वरीय देखभाल पर विश्वास के द्वारा जा सकते हैं। ...अहा, यह छिपने का स्थान कितना बहुमूल्य है! ... उस तहलके के बीच में जिसमें पूरी दुनिया अब भी सक्रीय है, हम क्या आराम और ताजगी पाते हैं... यहाँ पर हम वो विश्राम, शान्ति, रोशनी और आनन्द पाते हैं, जिसे न तो संसार दे सकता है और न ही छीन सकता है। R.1788, c.1, p.2,3 “वह सर्वशक्तिमान की छाया में ठिकाना पाएगा” - इसे छाया में तम्बू को ढक कर रखने वाले बादल - जो कि परमेश्वर की उपस्थिति और सुरक्षा का चिन्ह था, के द्वारा दर्शाया गया है। R. 1913, c. 2, p.1. आमीन

**भजन संहिता 91:2 मैं यहोवा के विषय कहूंगा, कि वह मेरा शरणस्थान और गढ़ है; वह मेरा परमेश्वर है, मैं उस पर भरोसा रखूंगा।**

हमारे भरोसे को हमें दृढ़ता से पकड़ कर रखना है; क्योंकि यह हमें आश्वस्त करता है कि परमेश्वर हमारे पिता हैं। हम सभी को वायरलेस टेलीग्राफी के बारे में कुछ तो पता है जिसका उपयोग अभी समुद्र और जमीन पर अदभुत ढंग से किया जा रहा है। और यह सच्चे मसीही और स्वर्गीय परमेश्वर के बीच बने रहने वाले वायरलेस सम्पर्क का एक क्षीण (हल्का) उदहारण है। प्रत्येक परिस्थितियों में, यह भरोसा, परमेश्वर की ओर झुकाव रखते हुए, उन्हीं की ओर देखेगा। पिता और बच्चे के बीच में एक वायरलेस सम्पर्क होगा। R. 5595, c.1, p.6 आमीन

**भजन संहिता 91:3 वह तो तुझे बहेलिये के जाल से, और महामारी से बचाएगा।**

अविश्वासी की महामारी चोरी छिपे चारों और फ़ैल जाएगी। R844,c1,p6 कसकर पकड़ा हुआ प्रत्येक गलत विचार कुछ सच्चाई को धुंधला कर देता है और सच्चाई में रुकावट डालता है। और अब हम उस समय में आ गए हैं जब परमेश्वर के हर बच्चे को सच्चाई की सभी चीज़ों की आवश्यकता है -- परमेश्वर के आत्मिक युद्ध के सभी हथयारों की आवश्यकता है। वह जो “परमेश्वर के सारे हथयारों” को नहीं पहने हुए है, निश्चय इस "बुरे दिन" में, "परिक्षा के समय" की गलतियों में गिर जाएगा... और “पहले परमेश्वर के घर का न्याय किया जाएगा"। कौन खड़ा हो पाएगा? उन लोगों को छोड़कर कोई भी नहीं, जो बहुमूल्य वादों के साथ और परमेश्वर के वचनों के महत्वपूर्ण उपदेशों के साथ "अति पवित्र विश्वास में अपनी उन्नत्ति कर रहे हैं"। R5801,c2,p4 आमीन

**भजन संहिता 91:4 वह तुझे अपने पंखों की आड़ में ले लेगा, और तू उसके परों के नीचे शरण पाएगा; उसकी सच्चाई तेरे लिये ढाल और झिलम ठहरेगी।**

हमारे स्वर्गीय पिता का प्रेम और देखभाल और सुरक्षा उनके पंख
और पंखुड़ियाँ हैं, जो हमें सभी हानि से बचाते हैं हमें गर्म और सुरक्षित रखते हैं। R5438,c2,p1

जी हाँ, परमेश्वर का सत्य -- युगों की दिव्य योजना में शामिल सत्य की भावी व्यवस्था -- उन सभी के लिए एक पर्याप्त ढ़ाल और भाला है, जो दिल की सादगी में इसे ग्रहण करते हैं और इसके प्रति विश्वासी साबित होते हैं। यह परमेश्वर के आत्मिक युद्ध के हथ्यार हैं। R3332,c1,top

कटनी का संदेशा इसके अलग - अलग रूपों में, सत्य के हर एक पहलू पर जिसका अभी उचित समय है और गलती के हर एक पहलू पर जिसे अब आगे लाया जा रहा है, दोनों पर प्रभाव डाल रहा है। और यह कटनी का संदेशा, परमेश्वर की हमें सुरक्षित रखने वाली शक्ति से, जिसके द्वारा, उनके वादों के अनुसार, हम जानते हैं कि, सच्चे "मसीह के देह" के "पैर" के सदस्यों को किसी भी तरह से कुछ चोट नहीं पहुँचेगी। R3441,c2,p1

आमीन

**भजन संहिता 91:5,6 तू न रात के भय से डरेगा, और न उस तीर से जो दिन को उड़ता है, न उस मरी से जो अन्धेरे में फैलती है, और न उस महारोग से जो दिन दुपहरी में उजाड़ता है॥**

दाऊद भविष्यद्वक्ता ने तीरों, महामारियों, ठोकरों आदि से भरे हमारे दिन का जो वर्णन किया है, आइये उसे हम याद रखें और इस घोषणा को याद रखें कि, हमारे निकट हज़ार गिरेंगे। आइये हम अपने प्रभु के सकारात्मक आश्वासन को न भूलें, कि वे अपने निज लोगों की, अत्यन्त चूने हुए लोगों की--जो अपने बुलावे और चुनाव को पक्के करने का प्रयास कर रहे हैं, उनकी सुरक्षा करेंगे। ढाल से सुरक्षा पाए हुए लोग, वे होंगे जो प्रभु के अत्यन्त निकट रहते हैं -- न केवल बाहरी रूप से, बल्कि उनके दिल के

अनुभव में भी। इन अत्यन्त चूने हुओं के पास यह आश्वासन है कि, परमेश्वर उनके निमित्त अपने दूतों को आज्ञा देंगे, ताकि उनके पावों में ठोकर के पत्थर से ठेस न लगे, बल्कि यहोवा के दिव्य रूप से नियुक्त किये गए प्रतिनिधियों के द्वारा, इनके पावों को ऊपर उठा लिया जाएगा। (भजन संहिता 91) R4438,c2,p5 आमीन

**भजन संहिता 91:7 तेरे निकट हजार, और तेरी दाहिनी ओर दस हजार गिरेंगे; परन्तु वह तेरे पास न आएगा।**

हमें यह याद रखना चाहिए कि, यह वादा विशेष समूह के लोगों तक ही सिमित है, जिन्होंने प्रभु, यहाँ तक कि परमप्रधान को अपना शरणस्थान और गढ़ बना लिया है। R4167,c2,bottom

जो लोग गिरेंगे या जिन्हें चोट पहुंचेगी, हमें उनके बारे में यह नहीं सोचना है कि, वे दुनिया के लोग हैं;बल्कि वे कलीसिया के मित्र हैं और कलीसिया के साथ निकटता से जुड़े हुए हैं। दुनिया दिव्य अनुग्रह से नहीं गिर सकती है, क्योंकि वे दिव्य अनुग्रह में है ही नहीं। यह वचन उन लोगों पर लागू होता है, जो वास्तव में पवित्र आत्मा से उत्पन्न हुए हैं या जिन्होंने पवित्र आत्मा से उत्पन्न होने के जैसा स्थान ग्रहण किया है; उदाहरण के लिए जंगली गेहूं जो कि असली गेहूं होने का दिखावा करते हैं। एक ओर हज़ार और दाहिनी ओर दस हज़ार गिरने वालों के बीच में एक अन्तर है। हम अनुमान लगा सकते हैं कि, एक हज़ार पूरे अविश्वासी में गिर सकते हैं, और दस हज़ार, यानि "बड़ी भीड़", महाक्लेश के समय में अपनी चादर को धोकर सफ़ेद करने और अपने आप को शुद्ध करने के लिए गिर सकते हैं। वे लोग बेबीलोन के साथ उनके पापों में भागीदार होगें और उनके महान पतन में हिस्सा लेंगें। केवल मसीह यीशु में पवित्र किये हुए, परमेश्वर के प्रिय पुत्र की प्रतिलिपियाँ हीं उनमें भरपूर होकर खड़े हो पाएंगें। R4926,c1,p5; c2,p1 आमीन

**भजन संहिता 91:9 हे यहोवा, तू मेरा शरण स्थान ठहरा है। तू ने जो परमप्रधान को अपना धाम मान लिया है ।**

यह वचन हमें संतों की सुरक्षा के लिए एक संकेत देता है। संतों की मजबूती बड़े तौर पर इस बात के ऊपर निर्भर करेगी कि, अभी के समय के लिए प्रेरितों के द्वारा दी गई चेतावनियों पर ये कितना ध्यान दे रहे हैं, और इस प्रकार से अपने विरोधी शैतान की युक्तियों को कैसे जानना है, यह सीखते हैं। "अत्यन्त चुने" लोगों का प्रभु के साथ इतना अच्छा तालमेल होगा और वे प्रभु के वचन की आत्मा से इतने भरे हुए होंगे, और इस कटनी के समय सहयोगी - काटने वाले के रूप में अपने विशेषाधिकारों का अभ्यास करके इतने आशीषित होंगे, और सच्चाई और इसकी सेवा के कार्यों को करने के लिए अपने जीवन को इस हद तक बलिदान करने का स्वाभाव होगा कि, इनके विरोधी शैतान के फंदों और भटकावों में से एक भी इनके लिए विशेष आकर्षण का विषय नहीं होगा। R2770,c2,p4 आमीन

**भजन संहिता 91:10 इसलिये कोई विपत्ति तुझ पर न पड़ेगी, न कोई दुःख तेरे डेरे के निकट आएगा॥**

कोई विपत्ति तुझ पर--यानि नई सृष्टि पर न पड़ेगी। R4767,c1,p3
हमें यह समझना है कि, पवित्र आत्मा से उत्पन्न हुए लोगों के दो विभाग हैं, और यह वचन उनमें से केवल एक ही विभाग की ओर संकेत करता है। इस विभाग के लोगों ने अपने प्रेम और भक्ति में से कुछ भी पीछे नहीं रखा है। परिस्थितियां इनके शारीरिक हितों के लिए विनाशकारी हो सकती है, लेकिन ये यह याद रखते हैं कि, "वे शरीर में नहीं, पर आत्मा में हैं", और यह महसुस करते हैं कि, कोई भी बाहरी प्रभाव उनकी नई सृष्टि के वास्तविक हित को कोई चोट नहीं पहुंचा सकता, और न ही यदि वे विश्वासी रहे, तो राज्य की महिमा में पहुंचने में कोई बाधा ही पहुंचा सकता है। इसी समूह के

लोगों के लिए, चाहे कोई भी विपत्ति आये, यह आश्वासन दिया गया है -- "कोई विपत्ति तुझ पर न पड़ेगी"। बाकि दो समूह के लोगों पर -- "बड़ी भीड़" - पर कुछ विपत्तियां अवश्य पड़ेंगी। इन्हें महाक्लेश में डाला जाएगा। R4767,c2,p4,5 आमीन

**भजन संहिता 91:11 क्योंकि वह अपने दूतों को <u>तेरे</u> निमित्त आज्ञा देगा, कि जहां कहीं तू जाए वे <u>तेरी</u> रक्षा करें।**

कटनी का संदेशा परमेश्वर की सुरक्षित रखने की शक्ति है। R3441,c2,p1 हमारा मानना है कि प्रभु ने दूतों, माध्यमों को ठहराया है, जो सभी "पैर" के समूह के लोगों के लिए बहुत उपयोगी है। ये माध्यम विभिन्न प्रकार के हैं। वर्तमान सत्य के सन्देश के साथ छापे पन्ने...पृथ्वी के सभी हिस्सों में, मसीह के "पैरों" के सदस्यों को खोजने और उन्हें स्थिर बनाये रखने के लिए भेजे गए हैं। प्रभु इन माध्यमों का उपयोग करना जारी रखेंगें, और अपने लोगों को उनके मार्ग के अन्त तक मजबूत करते रहेंगे। यदि ऐसे भी कोई लोग हैं, जिनका इस प्रकार से मार्गदर्शन न हो, तो ऐसा इसलिए होगा, क्योंकि उनमें स्वंय में कुछ दोष है। हममें से हर एक को यह देखना चाहिए कि, हम "तुझ पर" वाले समूह के हैं। "कोई विपत्ति तुझ पर न पड़ेगी"। इसका मतलब हमारे मार्ग के बहुत अन्त तक दिव्य सुरक्षा का मिलते रहना है। R5817,c2,top; p1 आमीन

**भजन संहिता 91:12 वे तुझ को हाथों हाथ उठा लेंगे, ऐसा न हो कि तेरे पांवों में पत्थर से ठेस लगे।**

इस भजन-संहिता के अनुसार हम देखते हैं कि, अब वह समय है जब "पैर" के सदस्यों पर ठोकर खाने का विशेष खतरा है, और इसलिए इन्हें विशेष सहायता की आवश्यकता है। यहूदियों की कटनी के समय में हमारे प्रभु की

उपस्थिति और उनके कार्यों को न तो समझा गया और न ही सराहना की गयी; और अब भी ऐसा ही है। आज की घटनाएँ प्रभु की उपस्थिति को प्रगट करती है। ये वस्तुएँ और पवित्रशास्त्र के महत्वपूर्ण सत्य, जो अब पहले से अधिक स्पष्ट और चमकदार हैं, दुनिया के लोगों के लिए ठोकर का पत्थर हैं; परन्तु विश्वासी और सचेत लोगों के लिए आशीषें हैं। परमेश्वर के सच्चे लोग, इस कदम के पत्थर पर चढ़ते हुए, एक उच्च दृष्टिकोण तक उठाये जाते हैं, और ठोकर खाकर गिरने से बचाए जाते हैं। छुड़ौती का सिद्धांत और इस समय स्वामी की दूसरी उपस्थिति के सबूत प्रभु के संतों के लिए न कहे जा सकनेवाले लाभ हैं। R5816,c2,p7; R5817,c1,p1 आमीन

**भजन संहिता 91:14 उसने जो मुझ से स्नेह किया है, इसलिये मैं उसको छुड़ाऊंगा; मैं उसको ऊंचे स्थान पर रखूंगा, क्योंकि उसने मेरे नाम को जान लिया है।**

उसने जो मुझसे स्नेह किया है (यहोवा कहते हैं), इसलिए मैं उसको छुड़ाऊंगा (महामारी आदि से): मैं उसको ऊँचे स्थान पर रखूँगा ("मसीह के संगी वारिस के" ऊँचे पद पर, "राज-पदधारी याजकों का समाज" का सदस्य, और "दिव्य स्वाभाव का सम्भागी" ), क्योंकि उसने मेरे नाम को जान लिया है (नाम की सराहना की है। R3332,c2,p4 आमीन

**भजन संहिता 91:15 जब वह मुझ को पुकारे, तब मैं उसकी सुनूंगा; संकट में मैं उसके संग रहूंगा, मैं उसको बचा कर उसकी महिमा बढ़ाऊंगा।**

परमेश्वर की प्रशंसा हो, उनकी ढाँढस और प्रेम जैसे देखभाल के लिए! “हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह; और जो कुछ मुझ में है, वह उसके पवित्र नाम को धन्य कहे”! R3332,c2,p6

यहाँ पर बात ये है कि, परमेश्वर हमें जरुरी नहीं है, कि मुश्किल में पड़ने से बचा लेंगे...वो मुश्किल हमारे लिए लाभदायक साबित हो सकती है। परमेश्वर ने पहले से ही वचनों के द्वारा कहा है कि, हमें क्लेश में भी आनन्दित रहना है...इसलिए परमेश्वर हमसे यह  वादा नहीं करते कि, हम मुश्किल से बच कर निकल सकते हैं, पर यह वादा करते हैं कि, वे अपने बच्चों को ह्रदय में आश्वासन देंगे, अनुग्रह करेंगे जो हमें सम्भाले रहे, जो हमें क्लेश के बीच में आनन्दित रहने में मदद करे। R5758,c1,p3; c2,p1 आमीन

**भजन संहिता 97:11 धर्मी के लिये ज्योति, और सीधे मन वालों के लिये आनन्द बोया गया है।**

परिक्षा के मौसम में, सब भाइयों को "परमेश्वर के आत्मिक युद्ध के हत्यारों" को पहनने के लिए जगाया जाएगा... जो कोई भी सोया हुआ होगा और अन्धकार में रहेगा और इस कारण से इस बुरे दिन में खड़े रहने के लिए तैयार नहीं होगा, भले वो किसी भी रोज़गार में हो, वह यह साबित कर देगा कि, परमेश्वर ने, जो ह्रदय को पढ़ते हैं, उनको वर्तमान सच्चाई की रोशनी के लिए योग्य नहीं पाया है। धर्मी के लिये ज्योति (सच्चाई), और सीधे मन वालों के लिये आनन्द (ये आनन्द, जो सच्चाई को महसूस करने से आता है), बोया गया है। R2453,c1,p4; R3648,c1,p3 आमीन

**भजन संहिता 103:13,14 जैसे पिता अपने बालकों पर दया करता है, वैसे ही यहोवा अपने डरवैयों पर दया करता है। क्योंकि वह हमारी सृष्टि जानता है; और उसको स्मरण रहता है कि मनुष्य मिट्टी ही है॥**

परमेश्वर हमें न्योता देते हैं कि, हम बच्चे की तरह उनपर विश्वास करें... उनकी जो हमारी छोटे से छोटे मामलों में, और जो हमारे प्रति प्यार से भरी रुची है उसपर हम पूरा आश्वासन रखें। R3161,c2,p1
इसके अतरिक्त परमेश्वर के मुख से वचन हमें ये ढांढस देते हैं कि, उनको पता है हमारी सृष्टि; और उनको स्मरण रहता है कि मनुष्य मिट्टी ही है--कमजोर, अपरिपूर्ण, मरने वाला; और ये उनका उद्देश्य नहीं है कि, हम लगातार खुद से लड़ते रहें -- परिपूर्ण इच्छा का विरोध अपरिपूर्ण शरीर के साथ; पर उन्होंने पुनरुथान के द्वारा प्रावधान बनाया है कि हमारे पास नया, परिपूर्ण शरीर होगा जो हमारे नए मन के साथ पूरा तालमेल रखेगा। R4897,c2,p6 आमीन

**भजन संहिता 103:17,18 परन्तु यहोवा की करूणा उसके डरवैयों पर युग युग, और उसका धर्म उनके नाती- पोतों पर भी प्रगट होता रहता है, अर्थात उन पर जो उसकी वाचा का पालन करते और उसके उपदेशों को स्मरण करके उन पर चलते हैं॥**

इस सकेत मार्ग में चलने की एक विशेषता यह है कि, अभी के समय में परमेश्वर केवल उन्हीं को स्वीकार करते हैं जो परमेश्वर के साथ एक निश्चित वाचा बांधते हैं। अगर कोई उनके साथ वाचा नहीं बांधता है, तो भले ही वो सोचे की वो एक मसीही है, पर वो नहीं है। आज की दुनिया में, 400 करोड़ लोगों की गिनती ईसाईयों में होती है ... पर बाईबल बहुत स्पष्ट रूप से बताती है: "यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप का इन्कार करे और अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले"। खुद से इनकार करना और क्रूस उठाना, अभी के समय में मसीह का चेला बनने के लिए, जरुरी

बलिदान है। बहुत लोग मसीही नहीं हैं, क्योंकि उन्होंने परमेश्वर के साथ वाचा नहीं बाँधी है...इस सकेत रास्ते में उस छोटे दरवाजे से प्रवेश करने के बाद, हमें वहीँ पर बने रहना है--जरुरी नहीं है कि बिना ठोकर खाये, जरुरी नहीं है कि बिना गलती किये; अगर हम अपनी सर्वोत्तम क्षमता के अनुसार और अपना ह्रदय परमेश्वर के प्रति वफादार रखते हुए इस सकेत मार्ग पर डगमगाते हुए भी सदा आगे बढ़ते जाएँ, तो हमें यानि प्रभु यीशु मसीह के दुल्हन के विभाग के सदस्यों को - उनके सिंहासन पर बैठने की अनुमति दी जाएगी। R5055,c1,p7,8; c2,p3 आमीन

**भजन संहिता 107:7 और उनको ठीक मार्ग पर चलाया, ताकि वे बसने के लिये किसी नगर को जा पहुंचे।**

आत्मिक इस्राएलियों के लिए यह खासकर सत्य है कि, परमेश्वर उनका सही रास्ते में, सर्वोत्तम रास्ते में मार्गदर्शन करते हैं। और इसलिए, परमेश्वर के सब सच्चे लोगों को, परमेश्वर के मार्गदर्शन पर ध्यान देना है और तत्परता से उसका अनुकरण करना है। अन्त में हम पक्के रूप से देखेंगे कि, उन्होंने हमारा मार्ग दर्शन सही रास्ते में किया है, भले ही वो रास्ता कितना ही अलग क्यों न हो, उस रास्ते से जो हमने अपने लिए चुना होता। पर हममें से बहुतों के साथ मुश्किल यह है कि, हम जो रास्ता लेते हैं वह वो रास्ता नहीं होता जिसपर परमेश्वर ने मार्गदर्शन किया हो, और इसलिए वो सर्वोत्तम रास्ता नहीं होता है। भले परमेश्वर उस गलत रास्ते में जो हम चले गए हैं, उसको निष्प्रभाव कर देते हैं ताकि

वह चुना हुआ गलत रास्ता हमको बड़े रूप से हानि न पहुंचा पाए, वरना हमारी हानि हो सकती थी...। इसलिए आइए, परमेश्वर पर पूरे विश्वास के साथ, जिन्होंने अभी तक हमारा मार्गदर्शन किया है, वो आने वाले दिनों में भी विजय पाने में मार्गदर्शन करेंगे, हम आगे बढ़ते रहें ...इसलिए हम खुद में सामर्थी न बने, पर परमेश्वर में सामर्थी बने, जिन्होंने हमको बुलाया है और अभी तक हमारा मार्गदर्शन किया है। R4064,c2,p2 आमीन

**भजन संहिता 107:29 वह आंधी को थाम देता है और तरंगें बैठ जाती हैं।**

दूसरे बहुत सारे वचनों की तरह, यह वचन मसीह की कलिसिया पर विशेष रूप से लागू होता है। "पौलुस बोलते हैं कि, यें सब बातें, पहले से ही, हमारी चेतावनी और शिक्षा के लिए लिखी गईं हैं" (1 कुरिन्थियों 10:11)। हमारा यह मानना है कि, लगभग सभी भविष्यद्वाणियाँ पहले प्रभु यीशु और उनके शरीर के सदस्यों को पहचानतीं हैं। परमेश्वर उनके चेलों पर बहुत सारे तूफानों को आने की अनुमति देते हैं। कभी तो पूरा सफर ही तूफानों से भरा हुआ होता है। हम कभी-कभी गाते हैं, "जब जीवन में तूफान उठ रहे हैं"। अपने पत्री में, प्रेरित कहते हैं कि, जिनके पास तूफान, क्लेश और कठिनाइयों नहीं हैं, उनमें इस बात का प्रमाण नहीं है कि, वे परमेश्वर के बच्चे हैं; वह कौन सा पुत्र है, जिसकी ताड़ना पिता नहीं करता? यदि वह ताड़ना जिस के भागी सब होते हैं, तुम्हारी नहीं हुई, तो तुम पुत्र नहीं हो (इब्रानियों 12:7,8)। अगर हम परमेश्वर के बच्चे हैं, तो हमें क्लेश और परीक्षाओं की ज़रूरत है,

ताकि हम "ज्योति में पवित्र लोगों के साथ मीरास में समभागी हों" (कुलुस्सियों1:12)। इन सभी अनुभवों में, क्लेश का लक्ष्य हमें प्रभु के निकट ले जाने का होता है, ताकि हम यह महसूस करें कि, हमें दिव्य आश्रय और देखभाल की आवश्यकता है। और इसलिए इन तूफानों से एक आशीष निकल कर बाहर आती है। R5239,c1,p2,3 आमीन

**भजन संहिता 116:15 यहोवा के भक्तों की मृत्यु, उसकी दृष्टि में अनमोल है।**

तो, यह उन सभों के साथ भी हो, जिन्होनें अपने उद्धारकर्ता के पदचिन्हों पर चलने के लिए अपने आप को समर्पित किया है। वे सब प्रभु यीशु मसीह की धार्मिकता की चादर से ढक दिए गए हैं, और परमपिता के लिए बहुमूल्य हैं, और उनकी मृत्यु जिन भी परिस्थितियों में हो, वो वास्तव में, आकस्मिक नहीं होगी, पर दिव्य स्वीकृति का एक चुंबन और पहले पुनरुत्थान में आने वाली आशीष की मुहर होगी ।R4054,c2,p1

हमारे सिर का एक बाल भी परमेश्वर के ध्यान के बिना नहीं गिर सकता। F646

जब तक परमेश्वर का समय हमारे लिए नहीं आया हो, मृत्यु खुद से परमेश्वर के संतों को छूने में शक्तिहीन है। R5546,c2,p3 आमीन

**भजन संहिता 119:105 तेरा वचन मेरे पांव के लिये दीपक, और मेरे मार्ग के लिये उजियाला है।**

परमेश्वर उन लोगों से ये इच्छा रखते हैं कि, जो लोग जागे हुए हैं, वे लोग परमेश्वर की योजना से ज्यादा से ज्यादा सीखें। जैसे वो देखते हैं, वे लोग परमेश्वर के अनुग्रह और ज्ञान में बढ़ेंगे। वे दुनिया की तरह नहीं होंगे। दुनिया अचम्भा में होगी - ये लोग दिन के लिए योग्य नहीं होंगे। अभी के समय में, पूरी पृथ्वी अंधकार से ढकी हुई है। लेकिन परमेश्वर के लोगों को एक विशेष ज्योति दी गयी है। उन्हें ज्योति से प्रेम है। "तेरा वचन मेरे पांव के लिये दीपक, और मेरे मार्ग के लिये उजियाला है"। ये रोशनी चन्द्रमा के जैसे नहीं है, जो दूर तक पहुंचती है, पर ये केवल थोड़ी सी रोशनी है, उनके पैरों के लिए, जो देख रहे हैं। जो लोग सोने को जा रहें हैं, वे पाएंगे की उनकी रोशनी बुझ गयी है। R5256,c2,p5 आमीन

**भजन संहिता 119:165 तेरी व्यवस्था से प्रीति रखने वालों को बड़ी शान्ति होती है; और उन को कुछ ठोकर नहीं लगती।**

ठेस पहुँचाना - या उन्हें ठोकर देना। देखें R1356,c2,p3.
तो परमेश्वर की व्यवस्था से प्रेम करना, इस तथ्य की सराहना करना होगा कि, परमेश्वर का एक महान उद्देश्य है; परमेश्वर की इच्छा क्या है, यह जानने में आनन्दित होना है; और हमारा उनकी न्याय, बुद्धि, प्रेम और शक्ति पर पूरा भरोसा रखना है। जो ऐसा करते हैं उन सभी के पास बहुत बड़ी शांति होती है। वे परमेश्वर के

दिव्य न्याय के प्रत्येक व्यवहार को नहीं समझते हैं, लेकिन उनका विश्वास इस तथ्य पर टिका है कि, परमेश्वर अति बुद्धिमान हैं, वे कोई गलती नहीं कर सकते। इस प्रकार से उनके पास अपने हितों के लिए परमेश्वर पर सहज रूप से विश्वास करने के कारण शांति होती है। R4898,c1,p2 आमीन

**भजन संहिता 121:2 मुझे सहायता यहोवा की ओर से मिलती है, जो आकाश और पृथ्वी का कर्ता है॥**

एक साधारण पाठ इस तथ्य से सिखाया जाता है कि, नूहा का जहाज पहले था और जल में तब तक बना रहा जब तक कि, जल प्रलय खत्म नहीं हो गया। यह उनके लिए परमेश्वर की ओर से सुरक्षा की गारंटी थी, उनके जलयात्रा में...सभी आत्मिक इस्राएलियों के लिए ये सबक होना चाहिए, “उसी को स्मरण करके सब काम करना, तब वह तेरे लिये सीधा मार्ग निकालेगा” (नीतिवचन 3:6),... “मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते”... “मुझे सहायता यहोवा की ओर से मिलती है”,... "मैं मसीह की सामर्थ से सब कुछ कर सकता हूं,जो मुझे बल देते हैं",...और ... "सब कुछ तुम्हारा है, तुम मसीह के हो, और मसीह परमेश्वर का है",... आइए हम इन दिव्य वादों के बल पर ज्यादा से ज्यादा, दिन-प्रतिदिन प्रभु की आशीषों में प्रवेश करें, और उनके मार्गदर्शन को जो उन्होंने हमें अतीत में दिए हैं और वर्तमान में दे रहे हैं, हमें भविष्य के लिए साहस दे और दृढ़ करे। "जिनहोंने हमारी अगुवाई पहले भी की है,

वह हमें अभी भी आगे ले जाएंगे, शांत रहो और उनकी इच्छा में डूब जाओ"। R4064,c1,p1,2 आमीन

**भजन संहिता 121:3 वह तेरे पांव को टलने न देगा, तेरा रक्षक कभी न ऊंघेगा।**

इस्राएल के परमेश्वर सचमुच में हमेशा अपने सच्चे लोगों के साथ उपस्थित रहते हैं। वे हमें कभी भी नहीं भूलते, बल्कि लगातार हमारे हितों की खोज में रहते हैं, खतरे के हर समय में हमारी रक्षा करते हैं, जो हमारी नई सृष्टि के हित के लिए सबसे अच्छा है, उसके अनुसार, हमारी हर जरूरत, सांसारिक और आत्मिक दोनों की पूर्ति करते हैं। परमेश्वर हमारे ह्रदय के हर एक विचार को पढ़ लेते हैं; वह हमारे भक्ति और प्रेम के हर एक आवेग पर ध्यान देते हैं; वह हमारे अनुशासन और शुद्धिकरण के लिए हमारे जीवन के आसपास के सभी प्रभावों को आकार देते हैं, और हमारी सहायता और आराम और सहानुभूति और परमेश्वर के साथ संगति के लिए की गई हमारी हर एक पुकार को सुनते हैं। वह कभी भी एक पल के लिए भी हमें नहीं भूलते हैं या हमसे अपने आप को दूर नहीं करते हैं। "सुन, इस्राएल का रक्षक, न ऊंघेगा और न सोएगा"। R5548,c2,p7 आमीन

**भजन संहिता 121:7 यहोवा सारी विपत्ति से तेरी रक्षा करेगा; वह तेरे प्राण की रक्षा करेगा।**

हम प्रभु के जितने करीब रहते हैं, और जितना बड़ा हमारा विश्वास होता है, उतना ही हमें परमेश्वर के दिव्य मार्गदर्शन का एहसास होता है, और उतना ही ज्यादा हम उन साधनों का उपयोग करेंगे, जो उन्होंने हमको मजबूत बनाने और बनाए रखने के लिए प्रदान किए हैं। हम संकट के समय में परमेश्वर को बुला सकते हैं; हम उनके पास प्रार्थना में जा सकते हैं; और वह उन लोगों को कभी भी विफल नहीं करते हैं, जिन्होंने अपना विश्वास परमेश्वर के ऊपर रखा है और गम्भीरता से उनके नियुक्त किये गए मार्ग पर चलने की कोशिश करते हैं। यह सच है कि, हम अपने सफर में, पूर्ण भरोसे और दृढ़ विश्वास के साथ आगे बढ़ सकते हैं। अपना सब कुछ प्रभु को समर्पण करने के बाद, हमें उनके मार्गदर्शन को खोजना है, क्योंकि  हमारे जीवन के हर मामले में वे हमारे साथ उपस्थित हैं। R5548,c1,p6 आमीन

**भजन संहिता 121:8 यहोवा तेरे आने जाने में तेरी रक्षा अब से ले कर सदा तक करता रहेगा॥**

मन को विश्राम देनेवाले इस तथ्य को जानना हमारा विशेषाधिकार है, कि यहोवा का ज्ञान और बुद्धि उनके पूरे ब्रह्माण्ड के साम्राज्य की सभी श्रेष्ठताओं से श्रेष्ठ है; और यह कि मनुष्य का क्रोध और अन्धकार की सभी संयुक्त शक्तियों का थोड़ा सा अंश भी परमेश्वर

को उनकी योजना से विफल नहीं कर सकता। वही शक्ति जो परमेश्वर के आत्मिक पुत्र को मनुष्य स्वभाव में परिवर्तित करने में सक्षम थी, वही शक्ति उनके पुत्र को असहाय बच्चे से लेकर दुनिया के छुटकारे के लिए उनके बलिदान के नियत समय तक, सभी विरोधियों के विरुद्ध सुरक्षित रखने में और उनकी रक्षा करने में भी सक्षम थी। R1681,c1,p6 आमीन

**भजन संहिता 125:1 जो यहोवा पर भरोसा रखते हैं, वे सिय्योन पर्वत के समान हैं, जो टलता नहीं, वरन सदा बना रहता है।**

वह महान दिन जो अब हम पर आ चूका है, इसमें हर आदमी के चरित्र के निर्माण को परखा जा रहा है, कि उसका चरित्र किस प्रकार का है, पर यहाँ तक कि मसीही माने जानेवालों में भी बहुत कम हैं, जो उस परिक्षा में खड़े रह पाएंगे। जो मसीह उस कठिन परिक्षा में, बिना किसी हानि के, सुरक्षित रूप से गुजरेंगे, वे ही हैं, जो परमेश्वर के सत्य में स्थापित हो गए हैं, "वे मसीह में जड़ पकड़ के बढ़ पाए हैं"। एक मजबूत और दृढ़ मसीह और एक कट्टरपंथी के बीच में अंतर यह है कि एक सत्य में स्थापित है, और दूसरा गलती में स्थापित है। उस दिन का "न्याय" दोनों विभाग के लोगों के बीच बड़े अंतर को प्रकट कर पायेगा, जब तक कि सभी को परखा और अजमाया नहीं जाता और उन्हें योग्य या अयोग्य नहीं पाया जाता। R5558,c2,p4,5 आमीन

**भजन संहिता 125:2 जिस प्रकार यरूशलेम के चारों ओर पहाड़ हैं, उसी प्रकार यहोवा अपनी प्रजा के चारों ओर अब से लेकर सर्वदा तक बना रहेगा।**

हम अच्छी तरह से देख सकते हैं कि येरुशलम शहर, जो कि पहाड़ों के ऊपर स्थित है, और हर दिशा से वह पहाड़ों से घिरा हुआ है, और इस तरह से दुश्मन के लिए इस शहर पर सफलतापूर्वक हमला करना मुश्किल होगा। पहाड़ी रास्तों के मौजूद रहने के कारण इस शहर पर हमला करना मुश्किल होगा और इस तरह, आसानी से इस शहर का बचाव किया जा सकता है। दाऊद भविष्यद्वक्ता की यह सलाह कि, प्रभु हर प्रतिकूल प्रभाव के तहत अपने लोगों के लिए एक किले की तरह हैं और उनकी सुरक्षा करते हैं, एक सुंदर वचन है, जिसकी सब  सराहना कर सकते हैं। R4623,c1,p4 आमीन

**भजन संहिता 145:18,19 जितने यहोवा को पुकारते हैं, अर्थात जितने उसको सच्चाई से पुकारते हें; उन सभों के वह निकट रहता है। वह अपने डरवैयों की इच्छा पूरी करता है, ओर उनकी दोहाई सुन कर उनका उद्धार करता है।**

यदि हमारे स्वामी को खुद मजबूती की जरुरत थी, तो निश्चित रूप से हमें भी इसकी आवश्यकता है; और अगर स्वामी को ये मजबूती रोने और आंसुओं के साथ गिड़गिड़ाहट के जवाब में मिली, तो यह हमारे लिए एक तरह से संकेत है कि, परमेश्वर को यह भाता है की वो विश्वास का पूरा आश्वासन हमको प्रदान करें, जो

हमें कुछ भी और सब कुछ उनके नाम और सेवा के कारण सहने के लिए, अच्छे सैनिकों के रूप में, हमें मजबूत करने में सक्षम है... लेकिन हालांकि ये मजबूती कैसे भी आये, यह आश्वासन परमेश्वर का होना चाहिए, ना की मनुष्यों या स्वर्गदूतों का, कि हम उनको भायें और ग्रहणयोग्य हों - और हम ये दावा और उम्मीद कर सकते हैं की बहुत ही बड़ी और बहुमूल्य प्रतिज्ञाएँ परमेश्वर ने उनके लिए  रखी हैं जो उनसे प्रेम करते हैं। R2775,c1,p4 आमीन

**भजन संहिता 145:20 यहोवा अपने सब प्रेमियों की तो रक्षा करता, परन्तु सब दुष्टों को सत्यानाश करता है॥**

इन "बुरे दिन" के "जोखिम समय" के बीच में, और पवित्र भविष्यद्वक्ताओं और प्रेरितों की चेतावनी की आवाजों के बीच में, जो हर तरफ के चालाकी से भरे खतरों की ओर इशारा करती है - और असलियत में चारों और से घिरी बुराइयों और खतरों की मौजूदगी के अहसास के बीच में भी - दिव्य सुरक्षा और देखभाल और निजी प्रेम का यह आश्वासन संतों के लिए कितना बहुमूल्य है! R5257,c1,p4 आमीन

**नीतिवचन 3:5,6 तू अपनी समझ का सहारा न लेना, वरन सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना। उसी को स्मरण करके सब काम करना, तब वह तेरे लिये सीधा मार्ग निकालेगा।**

यदि कभी-कभी हम नहीं जानते कि दाईं ओर या बाईं ओर मुड़ना है, पता नहीं कि कहां चलना है, तब आइए हम अपने ह्रदय को प्रभु के पास ले जाएँ, और उनके सामने इन्तज़ार करें, दिव्य आश्वासन को याद करते हुए, “यहोवा को अपने सुख का मूल जान, और वह तेरे मनोरथों को पूरा करेगा॥ अपने मार्ग की चिन्ता यहोवा पर छोड़; और उस पर भरोसा रख, वही पूरा करेगा”। “उसी को स्मरण करके सब काम करना, तब वह तेरे लिये सीधा मार्ग निकालेगा”। इस प्रकार प्रभु की प्रिय आवाज मार्ग की सभी परवाह और चिंताओं के बीच आराम, शक्ति, सुकून लाती हैं। "और जितने इस नियम पर चलेंगे उन पर, और परमेश्वर के इस्त्राएल पर, शान्ति और दया होती रहे॥" (गलातियों 6:16) R5807,c2,p3 आमीन

**नीतिवचन 4:18 परन्तु धर्मियों की चाल उस चमकती हुई ज्योति के समान है, जिसका प्रकाश दोपहर तक अधिक अधिक बढ़ता रहता है।**

हमारा यह मानना है कि, यह तथ्य कि हमारे महान गुरु उपस्थित रहकर "कटनी" के काम की निगरानी कर रहे हैं, ये इस वचन से सम्बंधित एक और आश्वासन है। हम अपने आप को इस विचार के साथ सांत्वना देते हैं कि, प्रभु की आंख, उनकी लाठी और उनकी सोंटे, अनुग्रह से अनुग्रह में और ज्ञान से ज्ञान में उनकी भेड़ों का मार्गदर्शन कर रही हैं। इसलिए यह आश्चर्यजनक नहीं है कि, हम पाते हैं, जैसा कि भविष्यवाणी में कहा गया था की,

"धर्मियों की चाल उस चमकती हुई ज्योति के समान है-- जिसका प्रकाश दोपहर तक अधिक अधिक बढ़ता रहता है"। वास्तव में, दिन-प्रतिदिन, थोड़े विवरण के स्पष्ट होते जाने की उम्मीद की जानी चाहिए, लेकिन हमारे विश्वास के ढाँचें के सभी आधार को बदला नहीं जा सकता। R3856,c2,p1 आमीन

**नीतिवचन 10:22 धन यहोवा की आशीष ही से मिलता है, और वह उसके साथ दुःख नहीं मिलाता।**

शाही याजकों के लिए जो अपने आत्म-बलिदान का प्रदर्शन करने में विश्वासयोग्य हैं, एक और तरह का धन आता है। ये पवित्र आत्मा का धन है। जिस अनुपात में वे परमेश्वर और सत्य की सेवा में, स्वार्थी रुचियों को, सांसारिक उद्देश्यों को, सांसारिक योजनाओं, आदि का त्याग करते हैं, ताकि वे अपने स्वर्गीय पिता और अपने प्रभु की समानता में ज्यादा से ज्यादा बढ़ सकें, उसी अनुपात में वे पवित्र आत्मा के धन को पाते हैं, और इस तरह से आत्मा के फल उनमें बहुतायत में बढ़ते जाते हैं -- जैसे की नम्रता, धीरज, सौम्यता, भाईचारा, प्रेम। इसके अलावा, वे एक शांति और एक खुशी पाते हैं, जिससे वे पहले अनजान थे। ... ये शांति और आनंद इस अहसास के द्वारा आता है, कि अपना सब कुछ प्रभु को देने के बाद, परमेश्वर के सभी बहुत ही बड़ी और बहुमूल्य प्रतिज्ञाएँ उनके हैं। और अब उनका विश्वास इन वादों को अपना मानकर मजबूती से पकड़ सकता है। R2762,c2,p2,3 आमीन

**नीतिवचन 29:25 मनुष्य का भय खाना फन्दा हो जाता है, परन्तु जो यहोवा पर भरोसा रखता है वह ऊंचे स्थान पर चढ़ाया जाता है।**

जो कोई भी एक वफादार और आज्ञाकारी ह्रदय के साथ विश्वास का अभ्यास करता है, वह इस प्रकार से आवश्यकता के हर समय में, परीक्षा के हर घंटे के लिए, हर एक कठिनाई और जटिलता के लिए और जीवन के सभी मामलों के लिए, अपने आप को बल और आवश्यकता के समय जरूरी अनुग्रह प्रदान करता है - और यह अनुग्रह उस भारी वस्तु (बैलास्ट) के समान है जो नाव को स्थिर बनाने के लिये रखी जाती है, और यही अनुग्रह जिसे हम विश्वास का अभ्यास करके पाते हैं, हमारे जीवन के सभी अनुभवों में, कड़वे के साथ-साथ मीठे में भी, हमें संतुलन और लाभ पहुँचाने में सक्षम है। R3545,c1,top आमीन

**यशायाह 26:3 जिसका मन तुझ में धीरज धरे हुए हैं, उसकी तू पूर्ण शान्ति के साथ रक्षा करता है, क्योंकि वह तुझ पर भरोसा रखता है।**

स्तिफनुस के पास भी यही आराम और आनन्द था जब उनके दुश्मन उन्हें पत्थरों के द्वारा मारकर उन्हें मौत के घाट उतार रहे थे; और परमेश्वर के हज़ारों से भी ज्यादा संत लोग इसी आराम और आनन्द की गवाही दे सकते हैं - जब वे अपने आप को चारों ओर से गरीबी, बीमारी, दुःख, लालसाओं और दुश्मनों के द्वारा घिरा हुआ पाते हैं और यहां तक कि, जब वे, आग रूपी कठिन

ताड़नाओं से घिरे रहते या उनका सामना करते हैं। कैसे ये आराम और आनन्द ऐसी स्थितियों में उनके लिए उपयुक्त हो सकते हैं? इसका उत्तर है: ये मन का आराम है - “जिसका मन तुझ में धीरज धरे हुए हैं, उसकी तू पूर्ण शान्ति के साथ रक्षा करता है”। कोई भी इस आराम की आशीष को नहीं जान सकता जब तक कि उन्होंने इसका अनुभव न किया हो। और कोई भी इसके (आराम और आनन्द) के महान मूल्य का एहसास नहीं कर सकता है, जब तक कि उनको विपत्ति के परिक्षाओं में नहीं डाला गया हो। R1961,c2,p6 आमीन

**यशायाह 30:15 शान्त रहते और भरोसा रखने में तुम्हारी वीरता है।**

प्रभु हमें उनके वचनों में आराम की चाबी देते हैं - "मुझ से सीखो; क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूं”। सचमुच में, एक नम्र और शान्ति की आत्मा में सुकून का रहस्य है। नम्र होना धीरज के अनुग्रह को बढ़ाना है; परमेश्वर की इच्छा के प्रति प्रेम से समर्पण करना है; उनके प्रेम और देखभाल पर पूरी तरह से विश्वास करना है; और उनकी सलाह जो की मार्गदर्शन से भरी है और उनके प्रावधानों के अंतर्गत दिव्य हस्तछेप में पूरी तरह से विश्वास करना है; और बुराई और अच्छे रिपोर्ट के माध्यम से, या अनुकूल या प्रतिकूल परिस्थितियों के माध्यम से, दृढ़ता से इस मार्ग में आगे बढ़ते रहना है। परमेश्वर के प्यारे बच्चों को ज्यादा से ज्यादा मसीह की नम्रता और शांति की आत्मा की नक़ल करने की खोज में रहना है, परमेश्वर की भविष्यवाणियों को स्वीकार करते हुए

और उनके उपदेशों को मानते हुए और जैसा कि प्रभु यीशु ने किया था, परमेश्वर की सामर्थ से सशस्त्र होकर, जो अकेले परमेश्वर ही दे सकते हैं, और देंगे भी, उन सभी को को प्रभु यीशु का जुआ अपने ऊपर उठाते हैं और उनसे सीखते हैं। R1962,top आमीन

**यशायाह 33:16 वह चट्टानों के गढ़ों में शरण लिए हुए रहेगा; उसको रोटी मिलेगी और पानी की घटी कभी न होगी॥**

हमें अपनी वास्तविक जरूरतों को छोड़ कर कुछ भी नहीं मांगना चाहिए, क्योंकि परमेश्वर (और हम नहीं) हमारी आवश्यकता और उपयोगिता को देखते हैं -- हमें हमेशा परमेश्वर को "रोटी और पानी" के लिए धन्यवाद करना चाहिए जिसका वादा परमेश्वर ने हमसे किया है, साथ ही साथ हर अतिरिक्त आराम के लिए भी हमें परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए। हमें हमारे लिए हमेशा परमेश्वर की सर्वोत्तम बुद्धि और असीमित प्रेम को महसूस करते हुए, अपने हितों को उनके हाथ से बाहर निकालने में डरना चाहिए। इस प्रकार, हमें हमेशा आनन्दित होते हुए रहना है, यह महसूस करते हुए कि, जो कुछ भी हमें घाटा पहुँचा सकता है, सब चीज़ें मिलकर हमारी भलाई ही को उत्पन्न करेगी। हमें दर्द के साथ परिचित होने की जरुरत है, या जटिल परिस्थितियों में बेचैनी की अवस्था में आने की जरुरत है, ताकि हम आवश्यक अनुभव या परिक्षा या ताड़ना को पा सकें। और हमें इस पाठ या ताड़ना की खोज में रहना चाहिए या इसे फुर्ती से सीखना चाहिए, और मसीह

की पाठशाला में खुद को उपयुक्त साबित करना चाहिए। R2009,c2,p5 आमीन

**यशायाह 33:17 तू अपनी आंखों से राजा को उसकी शोभा सहित देखेगा।**

ओह, क्या शान्ति और सुकून का दर्शन है, महिमा की आशीष का, आनंदमयी संगति का, मृत्युहीन प्रेम का, निर्मल पवित्रता और न खत्म होने वाले आनंद का! कौन, लेकिन वे जिन्होनें इस दर्शन के महिमा की एक झलक देखी है, वे इस दर्शन की सामर्थ का अनुमान लगा सकते हैं, जो कि उन्हें पवित्र उत्साह के लिए और सबसे अधिक प्रयास करने के लिए प्रेरित करता है, और अनुशासन के इस मार्ग में जो कि उन्हें इस दर्शन की महिमा की ओर ले जायेगा, इस दर्शन से मिली सामर्थ्य, इन्हें इस मार्ग में आनेवाले सभी नुकसानों और क्रूसों को धीरज से सहते रहने के प्रेरित करती है। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि जो मसीह का नाम लेते हैं उनमें से सभी इस धन्य दर्शन की प्रेरणा से नहीं भरे हैं; क्योंकि उन लोगों में से भी जो सैद्धांतिक रूप से इन चीजों को जानते हैं, बहुत कम लोग हैं, जो कि वास्तव में इस दर्शन को देखते हैं, और विश्वास के द्वारा यह महसूस करते हैं की उनका इसमें स्थान है।... यदि आप केवल उनमें से नहीं जो परमेश्वर के वचन को सुनते हैं, पर वफादारी से वचनों के अनुसार चलने वालों में से हैं, तब, अब भी “अपनी आँखों से” विश्वास के द्वारा आनेवाले समय में प्रगट होनेवाली उस महिमा की प्रेरणा को पकड़ सकते हैं, और आपके

क़दमों को धार्मिकता के मार्गों में जिला सकते हैं।R2087,c2,p3 आमीन

**यशायाह 40:31 परन्तु जो यहोवा की बाट जोहते हैं, वे नया बल प्राप्त करते जाएंगे, वे उकाबों की तरह उड़ेंगे, वे दौड़ेंगे और श्रमित न होंगे, चलेंगे और थकित न होंगे॥**

यदि कोई अपने आप में आशा रखता है, और मुख्य रूप से अपने बल पर निर्भर करता है, तो यह उनके लाभ के लिए होगा कि प्रभु उनके उत्साह को नष्ट करने की अनुमति देंगे, कि वे ज्यादा घबरा सकतें हैं, अपने सभी आत्म-आश्वासन को खो सकते हैं, परमेश्वर के मार्गदर्शन और समर्थन के लिए लगातार उनकी तलाश को, उनकी पूरी लाचारी और कमजोरी को और परमेश्वर पर पूरी तरह से निर्भर करने की उनकी आवश्यकता को, महसूस कर सकते हैं। जैसा कि प्रभु के बच्चे इस प्रकार से उन पर प्रतीक्षा करना सीखते हैं, उनके लिए यह वादा पूरा होता है, “परन्तु जो यहोवा की बाट जोहते हैं, वे नया बल प्राप्त करते जाएंगे, वे उकाबों की तरह उड़ेंगे, वे दौड़ेंगे और श्रमित न होंगे, चलेंगे और थकित न होंगे”॥ R5712,c2,p6 आमीन

**यशायाह 41:10 मत डर, क्योंकि मैं तेरे संग हूं, इधर उधर मत ताक, क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर हूं; मैं तुझे दृढ़ करूंगा और तेरी सहायता करूंगा, अपने धर्ममय दाहिने हाथ से मैं तुझे सम्भाले रहूंगा॥**

मसीह के शरीर के हर एक सदस्य के पास, परमेश्वर के सच्चे इस्राएली के पास, हमारे धरती पर के जीवन (वनवास) की इस यात्रा से जुड़े हर अनुभव में प्रभु के नित्य मार्गदर्शन का विशेषाधिकार है। प्रतिदिन हमारी नयी सृष्टि के पालन-पोषण के लिए हमें स्वर्गीय मन्ना दिया जाता है। जीवन का जल, जो की परमेश्वर के वचन हैं, ये हमें युगों की चट्टान के द्वारा जो की प्रभु यीशु मसीह हैं उनके द्वारा प्रतिदिन ताज़गी देते हैं। जब हम खतरे में होते हैं, या जब हम किसी मना किये हुए रास्ते में भटक जाते हैं, तो हमारे परमपिता की लाठी हमें भटकने से रोक देती है। परमपिता कितने प्यार से हमें सही रास्ते में वापस लाते हैं, और हमारे घावों को ठीक करते हैं, और विनम्रता से हमारी ठोकरों और कमजोरियों को क्षमा करते हैं। निश्चित रूप से हम अपने स्वर्गीय मार्गदर्शक पर आँख मूंदकर विश्वास कर सकते हैं। इस प्रकार से हम उनमें आराम कर सकते हैं और हम परीपूर्ण शांति में रह सकते हैं। R5548,c2,top आमीन

**यशायाह 41:13 क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा, तेरा दहिना हाथ पकड़कर कहूंगा, मत डर, मैं तेरी सहायता करूंगा॥**

इन बहुमूल्य आश्वासनों के पीछे शांति की एक आशीष, आत्मा की शांति, मसीह के एक अच्छे योद्धा के रूप में कठोरता को सहन करने की क्षमता और क्लेश के समय में निर्वाह और बल का प्रदान करना है...जिसे कोई भी जीभ व्यक्त नहीं कर सकती। इन बहुमूल्य आश्वासनों ने बीते हुए समय में, परमेश्वर के प्रति

विश्वासी लोगों को कई मुश्किलों और तनावपूर्ण अनुभवों से गुज़रने में दृढ़ता के साथ मदद की है, जिसे दुनिया देख के आश्चर्यचकित हो जाती है, दुनिया ने उन्हें अग्नि रूपी क्लेश में देखा है, लेकिन यह नहीं देखा है कि उनके साथ परमेश्वर का पुत्र है (जैसा की दानिय्येल 3:25 वचन में)। परमेश्वर के प्रति विश्वासी लोग अनदेखे को मानों देखते हुए दृढ़ रहते हैं (इब्रानियों 11:27 वचन)। R4784,c2,p4 आमीन

**यशायाह 43:2 जब तू जल में होकर जाए, मैं तेरे संग संग रहूंगा और जब तू नदियों में होकर चले, तब वे तुझे न डुबा सकेंगी; जब तू आग में चले तब तुझे आंच न लगेगी, और उसकी लौ तुझे न जला सकेगी।**

जैसा कि यरदन की नदी को पार करते समय इस्राएलियों को डरने की कोई बात नहीं थी क्योंकि परमेश्वर का सन्दूक, जो कि, उनकी दिव्य उपस्थिति का चिन्ह था उनके हर खतरे के बीच में खड़ा था, इसलिए एक मसीही के पास डरने की कोई बात नहीं है, जब तक कि वह परमेश्वर की दिव्य उपस्थिति और स्वीकृति का एहसास करता है। एक मसीही समुद्र रूपी तकलीफों को कष्ट से पार कर लेता है, और अग्नि रूपी विपत्ति से भी गुजर जाता है, लेकिन इनमें से कोई भी चीज उसको हानि नहीं पहुंचा सकती है, जब तक परमेश्वर उसके साथ हैं। परमेश्वर की उपस्थिति और उनके प्रेम को ऐसी परिस्थितियों में जब हम महसूस करते हैं, जो की साधारण परिस्थितियों में हम नहीं कर पाते हैं, तो यह हमारे विश्वास और आशा और प्रेम को इतनी मज़बूती देता है, जो कि

अन्यथा प्राप्त नहीं किया जा सकता है। और इस प्रकार से सब चीजें मिलकर उनके लिए भलाई ही को उत्पन्न करती है, जो परमेश्वर से प्रेम करते हैं; अर्थात उन्हीं के लिये जो उनकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं। R1857,middle आमीन

**यशायाह 46:10,11 मेरी युक्ति स्थिर रहेगी और मैं अपनी इच्छा को पूरी करूंगा...। मैं ही ने यह बात कही है और उसे पूरी भी करूंगा; मैं ने यह विचार बान्धा है और उसे सफल भी करूंगा।**

वह क्या था जिसने प्रभु और प्रेरितों को इतना दृढ रखा और जब वे अत्यन्त पीड़ा में थे तब भी उन्हें ऐसा मन का विश्राम दिया? यह उनका विश्वास था - परमेश्वर के प्रेम, शक्ति और बुद्धि पर उनका विश्वास। उनका मानना था कि जिसका वादा परमेश्वर ने किया है, वे उसको पूरा करने में भी सक्षम है, और यह की परमेश्वर की धार्मिक और उदारता से भरी दिव्य योजना कभी भी असफल नहीं हो सकती है; क्योंकि अपने भविष्यद्वक्ताओं के मुख से परमेश्वर ने यह एलान किया है कि, 'मेरी युक्ति स्थिर रहेगी और मैं अपनी इच्छा को पूरी करूंगा...। मैं ही ने यह बात कही है और उसे पूरी भी करूंगा; मैं ने यह विचार बान्धा है और उसे सफल भी करूंगा'। सेनाओं के यहोवा ने यह विचार बाँधा है, कौन उसे नापसन्द कर सकता है? परमेश्वर के आश्वासनों पर वे विश्राम करते थे। उनके विश्वास की लंगर परमेश्वर में ठहरी हुई थी, और फिर चाहे तूफ़ान कितनी भी तेजी से आये या जीवन की लहरें उन्हें कितनी भी ऊँचाई पर से उछाले, इससे उन्हें कोई फर्क नहीं

पड़ता था क्योंकि उनके विश्वास की लंगर ने परमेश्वर के सिंहासन को मजबूती से पकड़ कर रखा हुआ था। R1834,c2,p7 आमीन

**यशायाह 49:15,16 क्या यह हो सकता है कि कोई माता अपने दूधपीते बच्चे को भूल जाए और अपने जन्माए हुए लड़के पर दया न करे? हां, वह तो भूल सकती है, परन्तु मैं तुझे नहीं भूल सकता। देख, मैं ने तेरा चित्र हथेलियों पर खोदकर बनाया है; तेरी शहरपनाह सदैव मेरी दृष्टि के सामने बनी रहती है।**

जब हम अपने स्वर्गीय पिता की ओर से मिले सबसे कोमल प्यार के इन आश्वासनों को पढ़ते हैं, और फिर हमारी दीन अवस्था पर विचार करते हैं, तो शायद ही यह महसूस कर सकें, कि हम वास्तव में उनके इस प्रेम का विषय हैं। फिर भी यदि हम विनम्रतापूर्वक सकेत मार्ग पर चल रहे हैं, तो ये आश्वासन हमारे आराम और सांत्वना के लिए हैं।
R. 957, c.1, p.1. आमीन

**यशायाह 50:7 क्योंकि प्रभु यहोवा मेरी सहायता करता है, इस कारण मैंने संकोच नहीं किया; वरन अपना माथा चकमक के समान कड़ा किया क्योंकि मुझे निश्चय था कि मुझे लज्जित होना न पड़ेगा।**

दुनिया को यह यह लग सकता है कि मसीही का मार्ग शांतिमय से दूर है, क्योंकि परमेश्वर के संतों का सफर अक्सर ही तूफानों से भरा होता है। लेकिन अगर हमारा हृदय मसीह पर विश्वास के द्वारा टिका रहे, और हम अपने लंगर (जो की मसीह पर विश्वास है) को जाने नहीं देते, तो जीवन के सभी हलचल में परमेश्वर हमें सुरक्षित रखेंगे, फिर चाहे कितनी ही कठोरता से हमें उछाला जाए,

या फिर कितनी ही तेजी से हमें उस तूफान रूपी हलचल का सामना करना पड़े। हमारा विश्वास यशायाह भविष्यद्वक्ता के साथ ऊपर के वचनों का दावा कर सकता है। परमेश्वर के आश्वासनों पर हम आराम कर सकते हैं, क्योंकि हमारा लंगर (जो की मसीह पर विश्वास है) परमेश्वर के सिंहासन को कसकर पकड़ा रहता है। हमारे स्वामी के दिल की भाषा यह थी, "हे धार्मिक पिता, संसार ने मुझे नहीं जाना, परन्तु मैं ने तुझे जाना"। प्रभु यीशु शुरू से ही परमपिता के साथ थे और वह उनके प्रेम और भलाई को जानते थे; उन्होंने परमेश्वर की शक्ति को प्रगट होते हुए देखा था; उन्होंने उनकी करुणा को ध्यान से देखा था। इसलिए हम भी जो परमेश्वर के साथ समान नाते में आ गए हैं, इस प्रकार से उनके प्रेम और विश्वसनीयता को जानते हैं और उनके प्रेम और विश्वसनीयता पर भरोसा करते हैं। R5432,c1,p2,3 आमीन

**यशायाह 51:7,12 हे धर्म के जानने वालो, जिनके मन में मेरी व्यवस्था है, तुम कान लगाकर मेरी सुनो; मनुष्यों की नामधराई से मत डरो, और उनके निन्दा करने से विस्मित न हो। मैं, मैं ही तेरा शान्तिदाता हूं; तू कौन है जो मरने वाले मनुष्य से, और घास के समान मुर्झाने वाले आदमी से डरता है,**

सर्वशक्तिमान परमेश्वर की ओर से किस तरह की संवेदना इस प्रकार से हमारी कमजोरी पर विचार करती है, जब शत्रु के डंक हमारे हृदयों को घायल करते हैं, और उनकी सांत्वना की मलहम वे हम पर उंढ़ेलते हैं। परमेश्वर अपने उन बच्चों में से एक को भी नहीं, जिनको मसीह के द्वारा स्वतंत्रता मिली है फिर से दासत्व के

अन्दर डालेंगे जैसा की वचन "मनुष्य का भय खाना फन्दा हो जाता है" में हम पढ़ते हैं। परमेश्वर हममें से हर व्यक्ति को, जिनको मसीह में पाप और अंधविश्वास से जो छुटकारा मिला है, और हमारे सभी विचारों, शब्दों और क्रियाओं के लिए परमेश्वर के प्रति हमारी जवाबदेही को मेहसूस कराते हैं जैसा की वचन" सेनाओं के यहोवा ही को पवित्र जानना; उसी का डर मानना, और उसी का भय रखना" में उन्होंने कहा है। R1788,c2,p2 आमीन

**यशायाह 51:16** मैं ने तेरे मुंह में अपने वचन डाले**,** और तुझे अपने हाथ की आड़ में छिपा रखा है**;** कि मैं आकाश को तानूं और पृथ्वी की नींव डालूँ**,** और सिय्योन से कहूं**,** 'तुम मेरी प्रजा हो'।

हमारे विश्वास को प्रोत्साहित करने के लिए...प्रभु ने हमें उनके सभी बहुमूल्य वादों के अलावा, सरलता से बच्चे की तरह उनपर भरोसा करने के लिये, इतने सारे प्रोत्साहन दिये हैं, और वे हमसे निवेदन करते हैं कि मनुष्यों की निन्दाओं को अनसुना कर दो... आकाश को तानूं (नए आकाश की स्थापना), और पृथ्वी की नींव डालूँ (नई पृथ्वी), और सिय्योन (इन क्लेशों के द्वारा परखे और सिद्ध किये गये लोग, नए राज्य - नया आकाश और पृथ्वी - के योग्य वारिस) से कहूं, 'तुम मेरी प्रजा हो'। R1788,c2,p1 आमीन

**यशायाह 54:17 जितने हथियार तेरी हानि के लिये बनाए जाएं, उन में से कोई सफल न होगा,**

परमेश्वर के सिय्योन के खिलाफ और छोटी झुण्ड के हर एक सदस्य के खिलाफ व्यक्तिगत रूप से कई जीभें उठी हैं - जीभ "जो की एक प्रकार के जहरीले साँप रूपी जहर से भरी" और लदी हुई है, जीभ जो की ईर्ष्या, द्वेष,

घृणा और झगड़े जैसी कड़वी है, जीभ जो झूठी निन्दा और गलत ढंग से पेश करने और झूठा बयान देने में संकोच नहीं करती, और विरोध में सब प्रकार की बुरी बातें कहती हैं, जो की झूठी बातें हैं। और बहुत हद तक ये हथियार और जुबान सफल भी हुए हैं, प्रभु यीशु की भेड़ के साथ, इस जुबान ने तबाही की है जैसा की हमारे चरवाहे के साथ की थी; और परमेश्वर ने इसकी अनुमति दी - उन्होंने न इसे रोका और न ही जीभ को रोका; और फिर भी इसके विपरीत, ऊपर के इस बहुमूल्य वादे के द्वारा वे हमें स्पष्ट रूप से आश्वासन देते हैं। इसकी सही व्याख्या क्या है? ...व्याख्या यह है कि "तुम शारीरिक दशा में नहीं, परन्तु आत्मिक दशा में हो" (रोमियों 8:9) वचन ...हम मसीह यीशु में "नई सृष्टि" हैं ...(2 कुरिन्थियों 5:17) वचन। ये हथियार और जुबान केवल हमारी पुरानी सृष्टि को चोट पहुँचाती है - जो की हमारा शरीर है, जिसे हमने पहले मृत्यु को समर्पित कर दिया है। R3050,c2,p8,9 आमीन

**यशायाह 55:11 उसी प्रकार से मेरा वचन भी होगा जो मेरे मुख से निकलता है; वह व्यर्थ ठहरकर मेरे पास न लौटेगा, परन्तु, जो मेरी इच्छा है उसे वह पूरा करेगा, और जिस काम के लिये मैं ने उसको भेजा है उसे वह सफल करेगा॥**

जो लोग ये दावा करते हैं कि दुनिया को बदलने के लिए परमेश्वर यहोवा छह हज़ार साल से कोशिश कर रहे हैं, और हर समय असफल रहे हैं, उनके लिए ऐसे विचारों के साथ की परमेश्वर के सभी उद्देश्य पूरे हो जाएँगे, उससे मेल रख पाना मुश्किल हो जाता है, जो की बाईबल आश्वासन के साथ बताती है। और उनका वचन पूरा हुए बिना उनके पास वापस नहीं आएगा। लेकिन जो चीज़ के लिए वचन को भेजा गया है उसे पूरा करके ही वापस आएगा। यह तथ्य कि दुनिया ने अभी तक अन्य मत को ग्रहण नहीं किया है, और यह कि प्रभु के ज्ञान ने अभी तक पृथ्वी को नहीं भरा है, यह एक

प्रमाण है कि वचन को अभी तक उस कार्य के लिए नहीं भेजा गया है। A95,p2 आमीन

**यशायाह 58:11 यहोवा तुझे लगातार लिए चलेगा।**

अगर, परमपिता के प्रावधान में, हमारे सांसारिक मामलों से जुड़ी कुछ परिस्थितियाँ इस या उस तरफ हो जाती हैं, **तो** हमारे हृदयों को प्रभु की ओर देखना है **ताकि** उन परिस्थितयों के द्वारा प्रभु हमें जो पाठ सिखाना चाहते हैं, उस पाठ को **हम** सिख पाएं, और इस तरह से हमारे परमेश्वर की महिमा हो पाए। एक मसीही को किसी भी अनुभव को किस्मत या बदकिस्मत के रूप में नहीं देखना चाहिए, लेकिन यह याद रखना चाहिए कि यदि वह प्रभु के करीब रहे, तो उसके साथ जुड़ी सभी चीजें, प्रभु के आदेश के द्वारा संचालित है। R4628,C2,P3 आमीन

**यशायाह 62:2,3 तेरा एक नया नाम रखा जाएगा जो, ... तू यहोवा के हाथ में एक शोभायमान मुकुट और अपने परमेश्वर की हथेली में राजमुकुट ठहरेगी।**

इसलिए परमेश्वर के हाथ में कलीसिया, दिव्य शक्ति के हाथ में कलीसिया है। उनकी सामर्थ्य कलीसिया को उपयोग करेगी और यह कलीसिया परमेश्वर की महिमा का मुकुट और सुंदरता की वस्तु होगी, जो हमारे परमेश्वर की कारीगरी की महिमा को अनन्तकाल के लिए दर्शाएगी। यह कितना आनन्दमय होगा! कितना सुंदर है! परमेश्वर यहोवा इन बहुमूल्य रत्नों को महिमा के उस मुकुट में जड़ेंगे, जिसके मुख्य स्थान में प्रभु यीशु होंगे, और यह परमेश्वर की सुन्दरता को दर्शाएगी, क्योंकि पिता कलीसिया को कोई भी महिमा नहीं देंगे जो उन्होंने प्रभु यीशु को नहीं दिया है। ये कलीसिया लोगों

के सामने "सुंदरता और हमेशा के लिए एक आनन्द" के रूप को प्रदर्शित करेगी - जो की परमेश्वर की कारीगरी होगी। R4914,C1,P2 आमीन

**यशायाह 63:9 उनके सारे संकट में उसने भी कष्ट उठाया ।**

पवित्रशास्त्र इस तथ्य की ओर संकेत करता है कि, प्रभु के समर्पित लोग इस प्रकार से पूरी तरह से प्रभु के हैं, कि उनके लोगों के सभी संकटों में प्रभु भी दुःख उठाते हैं। जब तरसुसवासी शाऊल आरम्भ की कलिसिया पर ताड़ना कर रहा था, तो हमारे प्रभु ने दमिश्क के मार्ग में उसे पुकारा , और कहा, "शाऊल, शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है? और पौलुस ने उनसे कहा, तू कौन है, प्रभु और प्रभु ने कहा? मैं यीशु हूँ, जिसे तुम सताते हो"। शाऊल महिमा में पहुंचे हुए हमारे रक्षक को सीधे रूप से नहीं सता रहा था, लेकिन वह प्रभु यीशु के चेलों को सता रहा था - नई सृष्टि को नहीं, बल्कि शरीर को। R5173,C1,P7 आमीन

**यशायाह 65:24 उनके पुकारने से पहले ही मैं उन को उत्तर दूंगा, और उनके मांगते ही मैं उनकी सुन लूंगा।**

कितनी प्रार्थनाएँ सुनी नहीं जाती हैं या रोक दी जाती हैं, क्योंकि जो माँगता है, वह पहले अपने ह्रदय की बुराई को शुद्ध नहीं करता है? "तुम मांगते हो और पाते नहीं, इसलिये कि बुरी इच्छा से मांगते हो, ताकि अपने भोग विलास में उड़ा दो" अर्थात, आप स्वार्थी ढंग से और परमेश्वर की इच्छा का सम्मान किये बिना पूछते हैं। लेकिन ताड़नाएँ पाकर ठीक किये हुए और पवित्र करके अलग किये हुए लोगों के लिये यह वादा है कि - "उनके पुकारने से पहले (शब्दों में अभिव्यक्ति मिलने से पहले ही दिल की इच्छा पढ़कर) ही मैं उन को उत्तर दूंगा (घटनाओं को आकार देना शुरू कर दूंगा ताकि अभी

या बाद में उत्तर दिया जा सके), और उनके मांगते ही मैं उनकी सुन लूंगा। हालाँकि यह वचन हजार साल के राज्य के युग में प्रभु के लोगों से संबंधित एक भविष्यवाणी से सम्बंधित है, फिर भी यह वचन इस युग के सभी वफादार लोगों के लिए सही है। उनकी सारी करुणा के लिए, यहां तक उनके दीन बच्चों में से सबसे छोटे बच्चे पर भी उनकी करुणा के लिये, प्रभु की स्तुति करो। R1866,C2,P2 आमीन

**यशायाह 66:13 जिस प्रकार माता अपने पुत्र को शान्ति देती है, वैस ही मैं भी तुम्हें शान्ति दुंगा...।**

प्रभु के लोग, सच्चाई को गले लगाने के बाद, हर तरफ से खुद को घिरा हुआ पाते हैं, वे बुराई और शैतान के सेवकों को उनका विरोध करते हुए पाते हैं; और अगर उनके पास पवित्रशास्त्र के वचनों का सुकून और आश्वासन और जो आनंद और शांति न तो दुनिया दे सकती है और न ही ले सकती है, नहीं होता, तब ये वास्तव में उनके लिए दुखद होता। लेकिन इन शर्तों के तहत, जैसा कि प्रभु ने उन्हें व्यवस्थित किया है, यह उनका विशेषाधिकार है, की भले ही उन्हें धार्मिकता के लिए सांसारिक चीजों की हानि उठानी पड़े, वे क्लेश में आनन्दित रहते हैं, और हर चीज में परमेश्वर को प्रभु यीशु के द्वारा धन्यवाद देते हैं। क्लेश में इस आनन्द का रहस्य क्या है? जो इतना बड़ा सुकून मिलता है? हम इसका उत्तर देते हैं, यह सुकून हमें पवित्रशास्त्र के वचनों के द्वारा मिलता है, जिसे पवित्र आत्मा हमपर प्रकाशित करती है। R3436,C1,P3,4 आमीन

**यिर्मयाह 33:3 मुझ से प्रार्थना कर और मैं तेरी सुन कर तुझे बड़ी-बड़ी और कठिन बातें बताऊंगा जिन्हें तू अभी नहीं समझता।**

परमेश्वर के राज्य के रहस्यों को जानने का विशेषाधिकार हमें दिया गया है, जिसे देखने का विशेषाधिकार बीते हुए समय के कई भविष्यद्वक्ताओं और बहुत से धर्मी व्यक्तियों को भी नहीं था। वर्तमान के सत्य की रोशनी के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करें! अब हम परमेश्वर की इस एक दिव्य योजना को देख सकते हैं - एक ऐसी योजना जिसमें बीते हुए समय का हर विवरण और आने वाले समय का हर प्रकाशन शामिल है; एक ऐसी योजना जो पूर्ण है - बिना किसी कमी और असंतुष्टता के; एक ऐसी योजना जो परमेश्वर के दिव्य न्याय, ज्ञान, सामर्थ और प्रेम के साथ और परमेश्वर के वचन के हर पाठ के अनुरूप है; और जो इस प्रकार से न केवल एक उचित योजना को साबित करती है, बल्कि परमेश्वर की योजना, अन्य सभी सिद्धांतों और योजनाओं जो की दोषपूर्ण और स्पष्ट रूप से गलत हैं, परमेश्वर के गुणों और उनके वचनों के साथ तालमेल में नहीं है, उसकी तुलना में उचित योजना है। जिन लोगों ने इस युगों की योजना को समझ लिया है, वे यह पहचानते हैं की इस योजना की उत्पत्ति मानवीय नहीं पर दिव्य है। R1867,C1,P5,6 आमीन

**विलापगीत 3:22,23 हम मिट नहीं गए; यह यहोवा की महाकरुणा का फल है, क्योंकि उसकी दया अमर है। प्रति भोर वह नई होती रहती है; तेरी सच्चाई महान है।**

हमने अपने परमेश्वर को जाना है और उनके विश्वास से भरे वचनों वचन पर विश्वास करना सीखा है। हमने कई बार तनाव और खतरे के समय में उनके अनुग्रह से भरे वादों को साबित किया है, और हम जानते हैं कि वह हमें असफल नहीं करेंगे... अगर हम इस आशा को जो हमारे और हमारी आत्माओं के लिए एक लंगर है, उसको जाने न दे। हम इधर-उधर एक ऐसे महासागर में बहते जाएंगे जिसका किनारा ही नहीं है, जिसकी प्रबल लहरें

हमें अनन्त मृत्यु की ओर ले जाएंगी। एक महाक्लेश अभी के समय में पूरी दुनिया पे आने वाला है, और प्रभु के किसी भी लोगों को, जिनका विश्वास और आशा हमारे प्रभु यीशु पर दृढ़ता से नहीं है, जो हमारे युगों की चट्टान हैं, जो कोई भी प्रभु के वादों पर भरोसा करने से डरता है, वह इस तूफान में डूब जाएगा। क्या यह अनुभव हमारा भी होगा? ... परमेश्वर के कुछ सच्चे बच्चों का इस महा क्लेश में हिस्सा होगा; पर जो कोई भी विश्वासी है, आज्ञाकारी है, उन्हें इस महाक्लेश से होके नहीं जाना पड़ेगा। वे अपने दौड़ के अन्त तक पूर्ण सुरक्षा में रहेंगे, और हम मानते हैं, कि, महाक्लेश के पहले उन्हें परदे के भीतर इकट्ठा किया जाएगा। R5497,C2,P2,3,4 आमीन

**विलापगीत 3:26 यहोवा से उद्धार पाने की आशा रख कर चुपचाप रहना भला है।**

परमेश्वर के वचन के बहुमूल्य वादे, जो केवल उनके लोगों के लिए हैं, जो पूर्ण रूप से उनके हैं, उन्हें आशा के लिए ये हर कारण देते हैं; उनके लोगों को मजबूत और अच्छे रूप से साहसी होने का पूरा अधिकार है। परमेश्वर के बच्चों के पास दुनिया के समान ही क्लेश और अनुभव होंगे, इसके अलावा मसीह के चेलों के रूप में विचित्र अनुभव और क्लेश भी आएंगे। ये क्लेश और अनुभव हमको आकस्मिक तरीके से नहीं आते हैं, जैसे की दुनिया को आते हैं, लेकिन परमेश्वर के लोगों को ये क्लेश और अनुभव प्रभु के प्रत्यक्ष देखरेख में आते हैं... इसलिए जैसे - जैसे उनका मार्गदर्शन प्रभु के वचन के द्वारा होता है, परमेश्वर के लोग ये सीखते हैं, कि जैसे- जैसे वे इस मार्ग में आगे बढ़ते हैं, उनमें अच्छे साहस का होना जरुरी है। बहुत मुश्किलों का सामना करना पड़ता है, और इसके लिए साहस की जरुरत होती है जो उन्हें कठिनाइयों पर विजय पाने में सहायता करती है। लेकिन जो साहस परमेश्वर और उनके "बहुत ही बड़े और बहुमूल्य वादों" पर विश्वास करने से पैदा होता

है, वो परमेश्वर के लोगों को मजबूत  करता है, अन्यथा वे पूर्ण रूप से पराजित हो सकते थे। यह उन्हें एक ऐसी मजबूती देता है जिससे अन्य सभी अनजान हैं। R5712,C1,P4,7 आमीन

**नहूम 1:7 यहोवा भला है; संकट के दिन में वह दृढ़ गढ़ ठहरता है, और अपने शरणागतों की सुधी रखता है।**

वे (परमेश्वर के संत) परमेश्वर की योजना के अनुसार, पूरी दुनिया को आशीष देने के लिए, इन क्लेशों को तैयारी के रूप में पहचानेंगे, और वे इन क्लेशों के द्वारा आनन्द और सुकून पाएंगे ...इस प्रकार से इस दिव्य आश्वासन के द्वारा सुकून और आशीष पाकर, परमेश्वर के संतों का पहला कर्तव्य यह है की वे दुनिया को यह देखने दें कि, सभी वर्तमान समय के संकट और असंतोष के बीच में, और यहां तक कि जब वे मुसीबत में सहभागी होते हैं और इसके तहत पीड़ित होते हैं, तब भी वे परमेश्वर के आने वाले महिमामय परिणाम के बारे में सोचकर जो उन्होंने अपने वचनों के द्वारा पहले से ही कहा है, आशा रखते हैं, और हमेशा आनन्दित और मगन रहते हैं। A338,P2,3 आमीन

**मलाकी 3:17 सेनाओं का यहोवा यह कहता है, कि जो दिन मैं ने ठहराया है, उस दिन वे लोग मेरे वरन मेरे निज भाग ठहरेंगे, और मैं उन से ऐसी कोमलता करूंगा जैसी कोई अपने सेवा करने वाले पुत्र से करे।**

इन गहनों में से पहले हमारे प्रभु यीशु थे ...यहोवा परमेश्वर ने यह प्रबंध किया है कि उनके पुत्र की समानता के अनुसार अन्य गहने काटे और चमकाये जाएँ ... क्योकि लिखा है, "क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं; और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिये सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहले से

हमारे करने के लिये तैयार किया।“ यह आवश्यक है कि इन सभी रत्नों को परमेश्वर ढूंढें, जो इन रत्नों को बना रहे हैं। लेकिन परमेश्वर इन रत्नों को ढूंढने के बाद, उन्हें हमारे प्रभु यीशु जो कि महान मणिकार हैं, उनके हाथों में रख देते हैं, ताकि प्रभु यीशु इन रत्नों को काटकर तराशने और चमकाने के बाद, राज्य के महिमामय कार्य में उनके साथ चमकने के लिए तैयार कर सकें ... परमेश्वर ने इन चुने हुये रत्नों के समूह के लोगों के साथ कोमलता करने के बारे में इस मतलब से नहीं कहा है कि, वे इनके सभी दुखों को दूर कर देंगें, क्योंकि यदि कोमलता इस तरह से की जायेगी, तो परीक्षा के इस समय के बाद मिलने वाली महिमा में वे सहभागी नहीं हो पायेंगे। दुखों को दूर करने के मतलब से परमेश्वर ने हमारे सिर, प्रभु यीशु के साथ भी कोमलता नहीं की ... लेकिन परमेश्वर इस समूह के लोगों को, उनकी सामर्थ से बाहर परीक्षा में न पड़ने देंगें। परमेश्वर की उनमें रुचि है और उनके प्रति सहानुभूति है, और वे इनको उन चीजों से बचाते हैं जो इनके लिए बहुत भारी साबित होती हैं।"R5119,**C**1,**P**2,3,4 आमीन